कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDl : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय-सूची

डॉ. मुकर्जी बलिदान दिवस (23 जून)
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास द्वारा आयोजित कार्यक्रम.................................... 7
राष्ट्रीय एकीकरण के लिए स्वतंत्र भारत का पहला शहीद
–**लालकृष्ण आडवाणी**.. 8

डॉ. मुकर्जी जयंती (06 जुलाई)
एक प्रखर राष्ट्रवादी
–**संजीव कुमार सिन्हा**.. 9

आपातकाल पर विशेष
बेहतर कल के लिए जरूरी है आपातकाल की याद................................ 15

लेख
बदहाली के गुनहगार
–**बलबीर पुंज**.. 20
भयावह आर्थिक तस्वीर
–**हृदयनारायण दीक्षित**.. 22
नितीश कुमार के 'सैकुलर' झूठ का साम्प्रदायिक सच
–**अम्बा चरण वशिष्ठ**.. 24

विशेष रिपोर्ट
उत्तराखण्ड में हिमालयी तबाही का दर्दनाक दृश्य
–**रामप्रसाद त्रिपाठी**.. 13
भाजपा ने बिहार में मनाया 'विश्वासघात दिवस'
–**विकास आनन्द**.. 26

मुख पृष्ठ : *डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी के 61वें बलिदान दिवस पर डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास द्वारा नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम का दृश्य।*

ऐतिहासिक चित्र

भारतीय जनसंघ के निर्माण के अवसर पर जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी को माल्यार्पण करते हुए लाला हंसराज गुप्ता। साथ में बैठे हैं रा.स्व.संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्री गुरुजी)

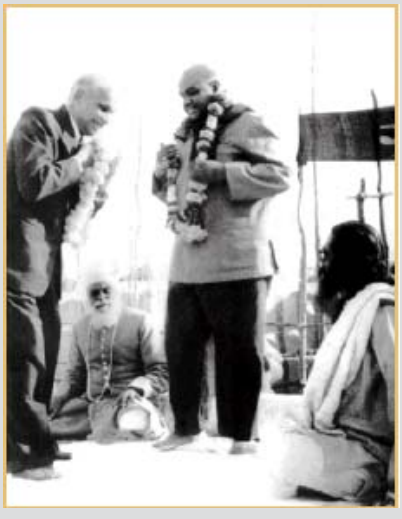

बोध कथा

राजा का उद्देश्य प्रजा का कल्याण

हमारे इतिहास में कई ऐसे प्रसंग हैं, जो हमें सीख देते हैं कि खुद को कभी दूसरों से महान नहीं समझना चाहिए। सभी का एकसमान सम्मान करना चाहिए।

नीतिज्ञ और विद्वान होने के साथ-साथ चाणक्य परम तपस्वी भी थे। मगध का राजा घनानंद लोभी, अहंकारी और अत्याचारी था।

एक दिन राजा घनानंद ने दरबार में चाणक्य से कह दिया, जितनी तुम्हारी प्रतिभा है, यदि रूप भी उतना ही सुंदर होता, तो कुछ अलग बात होती। भरे दरबार में अपमान से आहत होकर चाणक्य ने कहा, राजन, मैं इस अपमान का बदला लेकर ही चैन से बैठूंगा।

अचानक एक दिन चाणक्य की चंद्रगुप्त से भेंट हो गई। वह उनके साहस और गुणों से प्रभावित हुए। उन्होंने चंद्रगुप्त को प्रेरणा देकर बुद्धि कौशल की सहायता से राजा घनानंद को पराजित करा दिया और उसे मगध का राजा बना दिया।

चाणक्य ने राजा चंद्रगुप्त को उपदेश देते हुए कहा, राजा का उद्देश्य प्रजा का कल्याण होना चाहिए। राजा को प्रजा के सुख के सामने अपने सुख की परवाह नहीं करनी चाहिए। इन उपदेशों को मानकर ही चंद्रगुप्त भविष्य में एक महान राजा बने।

प्रस्तुति : शिव कुमार गोयल

(अमर उजाला से साभार)

व्यंग्य चित्र

लोकतंत्र का काला अध्याय

समाधकीय

आपातकाल की यादें आंखों के सामने जैसे ही आने लगती हैं, शरीर में सिहरन और लोकतंत्र की हत्या के एक नहीं अनेक उदाहरण सामने आने लगते हैं। कांग्रेसी शासन का यह काला अध्याय 25 जून 1975 को प्रारंभ हुआ था। श्रीमती इंदिरा गांधी तत्कालीन प्रधानमंत्री थी। देश स्तब्ध था। सारे के सारे चाटुकार कांग्रेसी इंदिराजी की आरती में लगे थे। वहीं विरोधी दल और छात्र आंदोलन का नेतृत्व कर रहे तत्कालीन नेता लोकनायक स्व. जयप्रकाश नारायण का आंदोलन भी चरम पर था। भारत ने कभी कांग्रेसीरूपी हिटलर का कभी ऐसा दौर नहीं देखा था। लोकतंत्र के सारे स्तंभ ध्वस्त कर दिए थे। विधायिका हो, या न्यायपालिका, कार्यपालिका हो या खबरपालिका, सबके द्वार पर आपातकाल की काली साया का ताला लगा हुआ था। श्रीमती इंदिरा गांधी का चुनाव इलाहाबाद हाईकोर्ट से निरस्त क्या हुआ, श्रीमती इंदिरा गांधी आपा खो बैठी। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर ताला। पत्रकारिता पर ताला। उस समय के वरिष्ठतम नेता मोरारजी देसाई से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी तक सभी लोग जेल में ठूंस दिए गए थे। सभी विरोधी दलों के नेता जेल में और कांग्रेसी नेता मौज में। सिसकते लोकतंत्र के विरोध में जो शख्स खड़ा होता था, उसे जेल की सींखचों में डाल दिया जाता था। दो लाख से अधिक लोग आजाद भारत में अपने ही देश में बंदी बना लिये गये। कानून मौन हो गया। कांग्रेस सरकार मदमस्त हो गयी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विद्यार्थी परिषद् सहित राष्ट्रवादी विचारधारा के वे लोग, जो लोकतंत्र को जीवित रखना चाहते थे, अपने हाथ में मौत लेकर संघर्ष में उतरे। गुप्त क्रांति का सूत्रपात हुआ। देश में गली-गली में आपातकाल का विरोध होने लगा और कांग्रेसी सत्ता की कुर्सी हिलने लगी। अन्याय की इंतहा के बाद भी कांग्रेसी नेता जो इंदिराजी के ढ़िंढोरची के रूप में इंदिराजी की गान में लगे थे, उन पर असर नहीं हुआ।

कहा जाता है, लोकतंत्र में ईश्वर का वास होता है। लोकतंत्र में आध्यात्मिक शक्ति होती है। धीरे-धीरे देश में लोकतंत्र को जीवित रखने के लिए आध्यात्मिक शक्ति का जन-जागरण शुरू हुआ। जैसे महाभारत काल में कंस के वध के लिए भगवान कृष्ण ने जेल में जन्म लिया था, उसी तरह लोकतंत्र के अनुयायियों ने आपातकाल से लड़ने के लिए एक धरातल पर आने का विचार किया। अपने-अपने झंडे और अपने-अपने विचार को कुछ दिनों के लिए भूल गए। फिर शुरू हुआ जनचेतना का ज्वार। आपातकाल के विरोध में घर-घर स्वर उभरने लगे। जन-जन के ज्वार को कांग्रेस समझ नहीं पाई उसे लगा कि जन-जन में इंदिराजी की लोकप्रियता और आपातकाल का डर उन्हें चुनाव में जीत हासिल कराएगा।

आपातकाल के साये में जनतंत्र का मौन स्वर क्रांति का रूप ले रहा था, इंदिरा जी उस काल को अपने अनुकूल मान रही थी, और उसी अनुकूलता को देख उन्होंने चुनाव की घोषणा की। संविधान को ताक पर रखकर सारे काम हो रहे थे। लेकिन जैसे पूर्व में कहा गया कि आपातकाल के साये की समाप्ति के लिए जेल में ही जनता पार्टी का गठन हो चुका था।

लोकतंत्र की मौत कभी नहीं हो सकती। वह अजर-अमर है। लोकतंत्र भारत की आस्था का सबसे बड़ा केन्द्र है। चुनाव हुए। कांग्रेस साफ हो गई। इंदिराजी को पता ही नहीं चला कि गुप्त क्रांति-जनक्रांति में कैसे बदल गई। आंदोलन का न कोई स्वर था, न शोर था पर ऐसा जोर था कि आजादी वाली कांग्रेस जो देश में कहर बरसा रही थी, के घुटने लोगों ने तोड़ दिए। राष्ट्रधर्म

का जागरण। राष्ट्रीय कर्तव्य का लोगों ने निर्वाह किया। भारतीय लोकतंत्र, अपनी परिपक्वता की परीक्षा में शत-प्रतिशत नम्बर से उत्तीर्ण हुआ। भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समझ को कोई चुनौती नहीं दे सकता। आपातकाल लगाने वाली तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिराजी जेल की सींखचों में चली गयी। भारत कभी किसी को अलोकतांत्रिक करने का अधिकार नहीं देता है। यह देश ऋषियों-मुनियों का है। यहां नदियां और पहाड़ पूजे जाते हैं। यहां प्रकृति की पूजा होती है। अत: हमने लोकतंत्र को एक उत्सव माना है। और जो भारत का लोकतांत्रिक चित्त है उसकी चिता को आग लगाने का अधिकार किसी को नहीं दिया जा सकता। जनता पार्टी जीती। लोकतांत्रिक शक्तियां मजबूत हों, लोकतंत्र के सभी स्तंभ मजबूत हों, सरकार कभी भी किसी पार्टी की बन सकती है, किसी गठबंधन की बन सकती है, लेकिन उसकी प्राथमिकता लोकतांत्रिक मूल्यों को और उसके आधार-जीवनमूल्यों को जीवित रखने का परम-पवित्र ध्येय बनाए रखना होगा।

भारतीय इतिहास में 25 जून सदैव काला दिवस के रूप में याद किया जाता है। हम सभी लोग इस दिन शपथ लेते हैं कि भारत को भविष्य में कभी ऐसी कालीशक्तियों का सामना न करना पड़े, और यदि कोई ऐसा दु:साहस कर भी ले तो उसका मुंहतोड़ जवाब देने के लिए जनता सामने आएगी।

इस अवसर पर देश में आजादी की दूसरी लड़ाई लड़ने में जिन लोगों ने अपना बलिदान दिया, जो परिवार उजड़ गए, हम सभी लोग उनके प्रति-श्रद्धांजलि व्यक्त करते हैं और उन परिवारों को ईश्वर अदम्य साहस दे, यह प्रार्थना करते हैं। ■

राजनाथ सिंह ने किया उत्तराखंड का दौरा

उत्तराखंड की त्रासदी इस शताब्दी की सबसे भीषण प्राकृतिक आपदाओं में से एक है। इसमें सैकड़ों लोग मारे गए और हजारों लोग अभी भी फंसे हुए हैं। भाजपा अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 22 जून को स्वयं प्रभावित क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया था। उन्होंने इस इस त्रासदी की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के गृहमंत्री से इसे राष्ट्रीय आपदा न घोषित करने के अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया है।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भाजपा इसे राष्ट्रीय आपदा मानती है। इसीलिए श्री राजनाथ सिंह ने 17 जून से 30 जून, 2013 तक भाजपा द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रव्यापी "जेल भरो आंदोलन" स्थगित कर दिया है।

उन्होंने देशभर के सभी भाजपा कार्यकर्ताओं और जन-प्रतिनिधियों को यह निर्देश दिया है कि वे "जेल भरो आंदोलन" की तैयारियों को छोड़कर अब राहत सामग्री इकट्ठा करने में जुट जाएं और उसे उत्तराखंड के पीड़ितों तक पहुंचाना सुनिश्चित करें।

उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं, जन-प्रतिनिधियों व आम जनता से यह अनुरोध किया है कि वे अधिक से अधिक सहायता व सहयोग उत्तराखंड त्रासदी के पीड़ितों तक पहुंचाएं। वे अपना सहयोग ''भारतीय जनता पार्टी के आपदा राहत कोष" को अथवा सीधे उत्तराखंड सरकार को भेज सकते हैं। ■

बिहार विधान सभा व विधान परिषद में भाजपा दल के नये नेता

भाजपा के संसदीय अधिकरण ने तय किया है कि श्री सुशील मोदी विधान परिषद में पार्टी के नेता होंगे तथा विधान मंडल दल के नेता रहेंगे। श्री नंदकिशोर यादव विधान सभा में पार्टी के नेता होंगे। गत 18 जून को भाजपा संसदीय दल के सचिव श्री अनंत कुमार ने यह जानकारी दी। ■

डॉ. मुकर्जी के कारण कश्मीर राष्ट्रधारा का अंग बना : लालकृष्ण आडवाणी

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को मजबूत बनाने पर बल देते हुए भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व उप प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि कांग्रेस विरोधी दलों को जोड़ना आज की राजनीति की आवश्यकता है।

गत 21 जून 2013 को डॉ. मुकर्जी

स्मृति न्यास द्वारा नई दिल्ली में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 61वें बलिदान दिवस पर आयोजित एक समारोह के दौरान श्री आडवाणी ने कहा, 'आजादी के बाद जब देश की राजनीति में कांग्रेस का वर्चस्व था, ऐसे समय में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ की स्थापना के बाद विभिन्न दलों को अपने से जोडने की वकालत की थी। उन्होंने कहा था कि अगर कांग्रेस के एकाधिकार को तोड़ना है तो अन्य कांग्रेस विरोधी दलों को जोड़ना होगा।' श्री आडवाणी ने कहा, 'मुखर्जी के इस बयान का महत्व आज की राजनीति के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है।'

पार्टी नेताओं को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बताए रास्ते पर चलने की बात कहते हुए श्री आडवाणी ने कहा कि आजादी के बाद पहले चुनाव में जनसंघ के देश के विभिन्न राज्यों में विधानसभा में 35 विधायक विजयी हुए थे, इसमें पश्चिम बंगाल से 9 विधायक और राजस्थान से 8 विधायक थे। इसी समय कांग्रेस-नीत सरकार ने राजस्थान में जागीरदारी उन्मूलन विधेयक पेश करने का निर्णय किया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इस विधेयक का समर्थन किया हालांकि राजस्थान में आठ में से हमारे छह विधायक इसके पक्ष में नहीं थे और उन्होंने इसका विरोध करने का निर्णय किया था।

श्री आडवाणी ने कहा, "श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि कोई भी पार्टी चुनावी घोषणापत्र में जो बात कहती है, उसे पूरा करना होता है क्योंकि वह जनता को दिया गया वचन होता है। अगर पार्टी के विधायक जनता से किए गए इस वायदे को पूरा नहीं करते हैं, तो उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने में भी हिचक नहीं होनी चाहिए।"

भाजपा नेता ने कहा कि उस समय जब पार्टी (जनसंघ) शैशवावस्था में थी तब इस विधेयक का विरोध करने वाले छह विधायकों को पार्टी से निष्कासित किया गया। 'आज भला कोई ऐसा सोच सकता है।'

उन्होंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि जम्मू-कश्मीर में श्यामा प्रसाद मुखर्जी की रहस्यमय परिस्थितियों में मौत की कोई जांच नहीं की गई।

श्री आडवाणी ने कहा कि पंडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में पहली सरकार में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और डॉ. अंबेडकर को मंत्री बनाया गया था। कांग्रेस के आलोचक दोनों नेताओं को महात्मा गांधी की सलाह पर पं. नेहरू ने मंत्रिमंडल में शामिल किया था।

इस कार्यक्रम में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रवादी विचाधारा को पल्लवित करने के लिए भारतीय जनसंघ की स्थापना की और देश की एकता और अखंडता के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। श्री सिंह ने श्री आडवाणी को उत्कृष्ट कोटि का चिंतक और पार्टी का सर्वोपरि मार्गदशक बताया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ.

शेष पृष्ठ 21 पर

राष्ट्रीय एकीकरण के लिए स्वतंत्र भारत का पहला शहीद

✍ लालकृष्ण आडवाणी

23 जून। ठीक साठ वर्ष पूर्व 1953 में इसी दिन देश को जम्मू एवं कश्मीर राज्य से हृदय विदारक समाचार मिला कि डा. श्यामा प्रसाद मुकर्जी अब हमारे बीच नहीं रहे।

मुझे अच्छी तरह से स्मरण है कि रात्रि के लगभग 2 बजे या उसके आसपास मैं जयपुर के जनसंघ कार्यालय के बाहर किसी के खटखटाने और रोने की आवाज सुनकर नींद से जागा, और मैंने सुना कि "आडवाणीजी, उन्होंने हमारे डा. मुकर्जी को मार दिया है!" वह एक स्थानीय पत्रकार था, जिसको टिकर पर यह समाचार मिला और वह अपने को रोक नहीं पाया तथा हमारे कार्यालय आकर इस दु:ख में मेरे साथ शामिल हुआ।

यह समाचार लाखों लोगों के लिए एक गहरा धक्का था। इस वर्ष की शुरुआत में डा. श्यामा प्रसाद मुकर्जी की नवगठित पार्टी भारतीय जनसंघ का कानपुर में अखिल भारतीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ था। इस सम्मलेन में राजस्थान से एक प्रतिनिधि के रुप में भाग लेने का सौभाग्य मुझे मिला था। यहीं पर फूलबाग में इकठ्ठे हुए हजारों प्रतिनिधियों को डा. मुकर्जी ने यह राष्ट्रभक्तिपूर्ण प्रेरक आह्वान किया था-"एक देश में दो प्रधान, दो निशान, दो विधान, नहीं चलेंगे, नहीं चलेंगे।"

कानपुर में ही पार्टी ने जम्मू एवं कश्मीर के भारत में पूर्ण एकीकरण को लेकर पहला राष्ट्रव्यापी आंदोलन चलाने का संकल्प लिया। डा. मुकर्जी ने तय किया कि वह इस आंदोलन का नेतृत्व आगे रहकर करेंगे-व्यक्तिगत रुप से शेख अब्दुल्ला के द्वारा लागू किए गए परमिट सिस्टम की अवज्ञा कर। उन्होंने यह भी निर्णय किया कि वह इस आन्दोलन के लिए समर्थन जुटाने हेतु देश के विभिन्न हिस्सों में जाएंगे। अपने इस पूर्व-अभियान जोकि रेलगाड़ी के माध्यम से हुआ, में उन्होंने श्री वाजपेयी को अपने साथ रहने को कहा।

तीन मांगों में से एक, दो प्रधान एक हो गए, और यद्यपि दो निशान अभी भी हैं मगर राष्ट्रीय तिरंगा राज्य में ऊपर लहराता है। दो प्रधानमंत्री एक बने, दो सर्वोच्च न्यायालय एक हुए, दो निर्वाचन प्राधिकरण एक हुए - यह सब डा. मुकर्जी के बलिदान के कारण हुआ।

उन दिनों मैं राजस्थान के कोटा में था। जब मुझे ज्ञात हुआ कि डा. मुकर्जी और अटलजी कोटा जंक्शन से गुजरेंगे तो मैं उनसे स्टेशन पर मिला। तब मुझे इसका तनिक भी आभास नहीं था कि मैं हमारी पार्टी के महान संस्थापक डा. श्यामा प्रसाद को अंतिम बार देख रहा हूं।

8 मई, 1953 को डा. मुकर्जी दिल्ली से जम्मू जाने के लिए पंजाब रवाना हुए। अमृतसर पर 20,000 से ज्यादा के समूह ने उनका शानदार स्वागत किया। अमृतसर से पठानकोट और वहां से माधोपुर की उनकी यात्रा एक विजयी जुलूस की तरह थी। माधोपुर एक छोटा सा कस्बा है जो पठानकोट सैनिक कैण्ट से करीब बारह किलोमीटर की दूरी पर है। माधोपुर रावी नदी के किनारे पर स्थित है और यही रावी नदी पंजाब को जम्मू एवं कश्मीर से अलग करती है। डा. मुकर्जी, अटलजी के साथ एक जीप पर बैठकर जम्मू-कश्मीर में प्रवेश करने हेतु रावी के पुल की ओर बढे। पुल के बीच में जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के एक जत्थे ने जीप को रोका और डा. मुकर्जी से पूछा कि क्या उनके पास परमिट है। डा. मुकर्जी ने नहीं में उत्तर दिया और कहा भारतीय संविधान के तहत प्रत्येक भारतीय नागरिक को देश की किसी भी भाग में जाने की आजादी है। जब पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तो उन्होंने वाजपेयीजी से कहा "कृपया आप वापस जाओ और लोगों को बताओ कि मैंने बगैर परमिट के जम्मू एवं कश्मीर राज्य में प्रवेश किया है, भले ही एक कैदी के रुप में।"

यह उल्लेखनीय है कि पठानकोट में पंजाब के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने डा. श्यामा प्रसाद मुकर्जी को मिलकर बताया कि उन्हें पंजाब सरकार से निर्देश हैं कि यदि डा. मुकर्जी के पास परमिट नहीं भी हो तो भी उन्हें पुल पर स्थित माधोपुर पोस्ट जाने दिया जाए।

साफ है कि यह केन्द्र सरकार और जम्मू एवं कश्मीर राज्य सरकार का संयुक्त अश्वपरेशन था कि डा. मुकर्जी को जम्मू एवं कश्मीर राज्य में बंदी

शेष पृष्ठ 25 पर

एक प्रखर राष्ट्रवादी

✍ संजीव कुमार सिन्हा

भारतीय जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी का विराट व्यक्तित्व था। वे कुशल पार्लियामेंटेरियन, शिक्षाविद्, मानवतावादी और महान् बलिदानी थे। भारत की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए उन्होंने अपना प्राणत्याग किया।

6 जुलाई 1901 को कलकत्ता में जन्मे डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी के पिता श्री आशुतोष मुकर्जी जाने-माने शिक्षाविद् थे। अध्ययन में प्रवीण डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने 1917 में मैट्रिक, 1921 में बीए, 1923 में एमए की डिग्रियां प्राप्त कीं एवं 1926 में इंग्लैंड से कानून की पढ़ाई की।

डॉ. मुकर्जी भारतीय भाषा के पक्षधर थे। उन्होंने स्वयं बंगाली में एमए किया। उन्हें मात्र 33 वर्ष की आयु में कलकत्ता विश्वविद्यालय का उपकुलपति बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने भारतीय भाषाओं में एमए शुरू किया और विश्वकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर से बंगला भाषा में दीक्षान्त भाषण दिलवाया। एक गुलाम देश में स्वदेशी भाषा को प्रतिष्ठित कर डॉ. मुकर्जी ने औपनिवेशिक शासन को भाषायी चुनौती भी दी।

डॉ. मुकर्जी वीर सावरकर के प्रखर राष्ट्रवाद से प्रभावित होकर हिंदू महासभा में सम्मिलित हुए और 1940 में इसके अध्यक्ष बने।

सन् 1942 में ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस के सभी छोटे-बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। देश नेतृत्वविहीन हो गया। उस समय डॉ. मुकर्जी बंगाल के हक मंत्रिमंडल में वित्त मंत्री थे, उन्होंने तत्काल इस पद से त्यागपत्र देकर सशक्त नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाई।

पं. नेहरू को करारा जवाब

पं. जवाहरलाल नेहरू अपने भाषणों में यह आरोप लगाने से बाज नहीं आते थे कि जनसंघ साम्प्रदायिक है। वे कहते थे कि मैं जनसंघ को कुचल दूंगा। डॉ. मुकर्जी ने इसका करारा जवाब दिया, Pt. Nehru says, he will crush Janasangh, but we are here to crush this crushing mentality. (पं. नेहरू की जो कुचलनेवाली मानसिकता है, हम उसको कुचल देंगे।)

1943 में बंगाल में अकाल पड़ा। डॉ. मुकर्जी के प्रयासों से राहत कार्यों में तेजी आई, जिसके चलते लाखों के प्राण बचे।

डॉ. मुकर्जी की यह देश को अविस्मरणीय देन है कि उन्होंने बंगाल को पाकिस्तान में जाने से बचाया। जब ब्रिटिश सरकार ने भारत के विभाजन का प्रस्ताव किया और कांग्रेस के नेताओं ने विभाजन स्वीकार कर लिया तब डॉ. मुकर्जी ने बंगाल और पंजाब के विभाजन की मांग उठाकर प्रस्तावित पाकिस्तान का विभाजन करवाया और आधा बंगाल और आधा पंजाब खंडित भारत के लिए बचा लिया।

देश की आजादी के पश्चात् संविधान सभा और केन्द्रीय मंत्री के नाते उन्होंने शीघ्र ही अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। महात्मा गांधी के अनुरोध पर डॉ. मुकर्जी प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व वाले पहले मंत्रिमंडल में शामिल हुए और उन्हें उद्योग का महत्वपूर्ण सौंपा गया। उनके कार्यकाल में भारत की प्रथम औद्योगिक नीति की घोषणा की गई। डॉ. मुकर्जी ने चितरंजन लोको, सिंदरी फर्टिलाइजर्स, बंगलोर स्थित हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स, दामोदर घाटी निगम जैसे प्रमुख उद्योगों की स्थापना की।

सन् 1950 में जब पं. नेहरू ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खान के साथ समझौता करके पूर्वी बंगाल के हिंदुओं को पाकिस्तानियों की दया पर छोड़ दिया, तब डॉ. मुकर्जी ने इसके विरोध में मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया और पं. नेहरू को चुनौती देने की ठानी।

डॉ. मुकर्जी एक प्रखर राष्ट्रवादी राजनीतिक दल बनाना चाहते थे। इसी सिलसिले में कलकत्ता में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूजनीय श्रीगुरुजी से मिलकर अपनी बात रखी। श्रीगुरूजी ने कहा कि संघ तो राजनीति में भाग नहीं लेगा

सिद्धांतों से समझौता नहीं

राजस्थान के पहले विधानसभा चुनाव में जनसंघ के आठ विधायक निर्वाचित हुए। वे सब के सब जागीरदार थे। विधानसभा में जागीरदारी उन्मूलन विधेयक प्रस्तुत हुआ। अधिकांश सदस्य इसके खिलाफ थे। डॉ. मुकर्जी को टेलीफोन से इसकी सूचना दी गई। डॉ. मुकर्जी ने कहा कि इस पर कोई समझौता नहीं करना। वे जयपुर आए। बैठक हुई। बैठक से पहले ही दो विधायकों को छोड़कर बाकी सब चले गए। वे दो विधायक थे-भैरोंसिंह शेखावत और जगत सिंह झाला। उसके बाद डॉ. मुकर्जी ने प्रेस कांफ्रेंस की और शाम में आम सभा। उन्होंने घोषणा की कि हमारी पार्टी नई बनी है, हमारी पार्टी छोटी है लेकिन हम सिद्धांत के साथ समझौता नहीं करेंगे। हमने अपनी पार्टी की ईकाई को कह दिया है या तो उन्हें पार्टी के घोषणापत्र के अनुसार जागीरदारी उन्मूलन का समर्थन करना होगा या उन्हें पार्टी से निष्कासित कर दिया जाएगा। और ऐसा ही हुआ। जागीरदारी उन्मूलन का विरोध कर रहे छह विधायकों को पार्टी से निकाल दिया गया।

लेकिन कुछ आदर्श प्रचारक-कार्यकर्ता, सर्वश्री दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, कुशाभाऊ ठाकरे, सुंदर सिंह भंडारी, नानाजी देशमुख, जगन्नाथ राव जोशी, इस योजना में लगाए गए। 21 अक्टूबर 1951 को नई दिल्ली स्थित रघुमल आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी के प्रयासों से भारतीय जनसंघ की स्थापना की गई।

सन् 1952 में लोकसभा के प्रथम आमचुनाव में जनसंघ के केवल तीन सदस्य चुने गए और डॉ. मुकर्जी दक्षिण कलकत्ता से निर्वाचित हुए थे। उनको भारतीय राजनीति में गठबंधन का पुरोधा माना जा सकता है। उन्होंने कई दलों को मिलाकर 32 सदस्यों वाली नेशनल डेमोक्रेटिक एलाएंस बनाया, जो विरोधी पक्ष में सबसे बड़ा था। इस प्रकार वह विरोधी पक्ष के नेता बने।

देश की आजादी के बाद से ही जम्मू-कश्मीर में अलगाववादी ताकतें सिर उठाने लगी। इसके विरोध में प्रजा परिषद् का सत्याग्रह चला। डॉ. मुकर्जी ने इस सत्याग्रह को अपना समर्थन दिया। उस समय जम्मू-कश्मीर का अलग झंडा था, अलग संविधान था और वहां का मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री कहलाता था। डॉ. मुकर्जी ने इसका प्रतिकार करते हुए नारा बुलंद किया- ''एक देश में दो निशान, एक देश में दो प्रधान, एक देश में दो विधान-नहीं चलेंगे, नहीं चलेंगे।'' उन दिनों जम्मू-कश्मीर में प्रवेश के लिए परमिट लेना पड़ता था। मई 1953 में डॉ. मुकर्जी जम्मू-कश्मीर की यात्रा पर निकल पड़े। वह बिना परमिट के जम्मू-कश्मीर राज्य में प्रवेश हुए, जहां उन्हें गिरफ्तार कर नजरबंद कर दिया गया। 40 दिनों तक न उन्हें चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई और न अन्य बुनियादी सुविधाएं दी गईं। 23 जून 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों उनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार 52 वर्ष की अल्पायु में भारत माता का एक सपूत राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिए शहीद हो गया।

डॉ. मुकर्जी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। जम्मू-कश्मीर में दो प्रधान और दो विधान समाप्त हुए। शेख अब्दुल्ला के षड्यंत्र का पर्दाफाश हुआ, उसे सत्ता से हटना पड़ा और जेल की हवा खानी पड़ी। ■

श्रद्धांजलि

विद्या चरण शुक्ल का निधन
एक राष्ट्रीय क्षति : राजनाथ सिंह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने नक्सली हमले में घायल हुए देश के वरिष्ठ नेता एवं भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री श्री विद्या चरण शुक्ल की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया है और इसे एक राष्ट्रीय क्षति बताई है। 84 वर्षीय श्री विद्या चरण शुक्ल जी का जीवन अत्यंत सादगीपूर्ण था और जीवन भर वे अपने राजनैतिक जीवन का निर्वाह पूर्ण निष्ठा एवं सच्ची लगन के साथ करते रहे। श्री राजनाथ सिंह ने उनके परिवारजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। ■

2014 पार्टी के लिये चुनौती वर्ष कार्यकर्ता जीत के लिये कमर कस लें : राजनाथ सिंह

गत 14 जून को भारतीय जनता पार्टी के प्रकोष्ठों के राष्ट्रीय संयोजकों एवं सह संयोजकों की एक दिवसीय बैठक का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सभी प्रकोष्ठ सहयोग व समर्थन देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि 2013 व 2014 चुनौतियों के वर्ष हैं और प्रकोष्ठों को उसके लिये कमर कस लेनी चाहिये और पार्टी की विजय सुनिश्चित करने के लिये जुट जाना चाहिये।

दोपहर बाद राष्ट्रीय महामंत्री रामलाल के मार्गदर्शन में 2 घंटे का समापन सत्र हुआ। संगठन मंत्री के मार्ग दर्शन के पूर्व सभी समूहों द्वारा अलग-अलग विस्तार

अपना-अपना नीति पत्र तैयार कर उसका क्रियान्वयन करें, जिससे भाजपा के जनाधार का विस्तार हो सके। उन्होंने बताया कि समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भाजपा के विस्तार-प्रसार की जिम्मेदारी सभी प्रकोष्ठों की है और इसी उद्देश्य से इनका गठन किया गया है।

पिछले तीन वर्षों में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी के कार्यकाल के दौरान सभी प्रकोष्ठों की गतिविधियों के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए भारतीय जनता पार्टी के श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि उन्होंने प्रकोष्ठों के कार्यों को नयी दिशा दी। श्री सिंह ने कहा कि उस समय में राष्ट्रीय व प्रदेश स्तर पर कई प्रकोष्ठों के बड़े-बड़े ऐतिहासिक कार्यक्रम हुए। जिसके कारण पार्टी और प्रकोष्ठों की गतिशीलता और सक्रियता सदैव दिखी। उन्होंने कहा कि सभी प्रकोष्ठों की अपनी-अपनी विशेष भूमिका है। अपने कार्य को सुचारू ढंग से चलाने के लिये उन्होंने पार्टी का पूरा

राजनाथ सिंह ने बताया कि सभी प्रदेशों के इकाईयों को निर्देश दिया जायेगा कि वे भी राष्ट्रीय प्रकोष्ठों के कार्यक्रमों में सहयोग करें।

उद्घाटन सत्र के बाद सभी प्रकोष्ठों की चार टोलियां बनायी गयी। प्रत्येक टोली की बैठक लेने के लिए पार्टी के वरिष्ठ नेताओं व संगठन मंत्रियों को जिम्मेदारी दी गयी। प्रथम टोली में राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुरलीधर राव, दिल्ली प्रान्त के पूर्व अध्यक्ष श्री बृजेन्द्र गुप्ता, द्वितीय में सभी मोर्चो व प्रकोष्ठों के प्रभारी श्री महेन्द्र पाण्डेय, तृतीय के हृदय नाथ सिंह तथा चौथी टोली में श्री रामप्यारे पाण्डेय व श्री भगवतशरण माथुर रहे। सभी टोलियों में अलग-अलग प्रकोष्ठों के गठन, उनके विस्तार तथा भावी रणनीति के बारे में व्यापक विचार-विमर्श हुआ। काफी महत्वपूर्ण सुझाव प्रकोष्ठ पदाधिकारियों ने दिये। सुशासन प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक व पूर्व पेट्रोलियम मंत्री श्री राम नाईक ने भविश्य के लिए सुशासन हेतु अच्छे कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु सुझाये।

से हुई चर्चाओं व सुझावों को सम्बन्धित समूह के वरिष्ठ नेताओं ने रामलाल जी की उपस्थिति में रखा। इसके बाद कई प्रकोष्ठ पदाधिकारियों ने उस सत्र में अपने-अपने महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये।

राष्ट्रीय महामंत्री संगठन श्री रामलाल ने प्रकोष्ठ अतिशीघ्र अपनी राष्ट्रीय समिति (National Team) का गठन कर लें तथा जुलाई के अंत तक वे अपने राष्ट्रीय समिति की बैठक अवश्य कर लें। जिसमें प्रदेश के सम्बन्धित सभी संयोजकों को भी आमंत्रित करें। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय समिति के सदस्यों की संख्या 11 होनी चाहिये।

जनाधार बढ़ाने में प्रकोष्ठों की भूमिका होनी चाहिए। उन्होने प्रत्येक प्रकोष्ठ को अपनी-अपनी नीति पत्र बनाने का भी निर्देश दिया। उनका मानना था कि यदि कोई महत्वपूर्ण बिन्दु किसी भी प्रकोष्ठ के नीति पत्र में होगा

शेष पृष्ठ 30 पर

भाजपा विचारधारा आधारित सबसे बड़ी पार्टी : राजनाथ सिंह

भारतीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी ही सबसे बड़ी विचारधारा आधारित एक मात्र पार्टी है जिसका अपना एक लंबा राजनीतिक इतिहास हैं, यही कारण है कि आज तक इस पार्टी का कोई समानान्तर विभाजन नहीं हुआ। जबकि

इसके विपरीत अन्य पार्टियों का न कोई विचारधारा है न ही कोई रचनात्मक सोंच, यही कारण है कि इनमें से कई पार्टियों का कई बार विभाजन हो चुका है, उक्त विचार भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 13 जून को भारतीय जनता युवा मोर्चा की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक के उदघाटन समारोह में व्यक्त किए।

श्री सिंह ने आगे कहा कि मैंने भी अपनी राजनीतिक यात्रा युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष के रूप में शुरू कर युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रदेश के शिक्षा मंत्री, मुख्य मंत्री, केन्द्रीय मंत्री रहते हुए दुबारा आज भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में आप सब के बीच में उपस्थित हूँ और ये बात सिर्फ भारतीय जनता पार्टी में ही संभव है, कि एक किसान का बेटा भी देश की सबसे बड़ी विचारधारा आधारित पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बन सकता है। साथ ही श्री सिंह ने यह भी कहा की आज राजनीतिक कार्यकर्ताओं के समक्ष सबसे बड़ा संकट है विश्वास का, आपको आने वाले समय में इस संकट से मुक्ति पाने की दिशा में प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि आज जरूरत देश के नौजवानों को एक जुट होकर, भ्रष्ट निक्कमी सरकार को उखाड़ फेंकने की है। इसके लिए युवा मोर्चा को संगठित होकर प्रयास करना होगा।

कार्यसमिति के उदघाटन अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री एवं युवा मोर्चा के प्रभारी श्री मुरलीधर राव एवं सभी मोर्चा एवं प्रकोष्ठों के समन्वयक श्री महेंद्र पाण्डेय एवं दिल्ली प्रदेश के भाजपा अध्यक्ष श्री विजय गोयल जी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक दूसरे दिन मिशन 2014 के विजय संकल्प के साथ सपन्न हुई। इस कार्यसमिति में जहां युवा मोर्चा ने राजनैतिक प्रस्ताव एवं धिक्कार प्रस्ताव लाकर राष्ट्र के विकास को अवरूद्ध करने एवं युवाओं के साथ छल करने हेतु कांग्रेसनीत यूपीए सरकार के कार्यो की घोर निन्दा की वहीं भाजपा शासित प्रदेशों के कार्यो की सराहना की। साथ ही छत्तीसगढ में हुए नक्सली हमले की कड़े शब्दों में निन्दा भी की गई।

कार्यसमिति के समापन अवसर पर बोलते हुए भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद श्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि 2014 का चुनाव भारतीय जनता युवा मोर्चा के लिए एक चुनौती है और भारतीय जनता युवा मोर्चा के नौजवान को हर चुनौती को अवसर के रूप में लेना चाहिए।

इसी क्रम में भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं भाजयुमो के प्रभारी श्री मुरलीधर राव ने कार्यसमिति सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज युवा मोर्चा के युवाओं को आवश्यकता है आत्मविश्वास की और यह आत्मविश्वास कोई बाहरी शक्ति नहीं है बल्कि अपने अन्दर का विश्वास है, जो किसी भी कार्य को करने की प्रेरणा देता है।

इसी क्रम में भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल जी ने बूथ स्तर तक युवा मोर्चा की टीम को सशक्त करने और उन्हें सक्रिय करने की आवश्यकता पर बल दिया और साथ ही युवा मोर्चा द्वारा किए जा रहे कार्यो की सराहना भी की। ■

बादल-फटने और भूस्खलन ने ली सैंकड़ों जानें और हजारों लापता

रामप्रसाद त्रिपाठी की विशेष रिपोर्ट

बादल-फटने और भू-स्खलन की घटनाओं के कारण उत्तराखण्ड में मची भारी तबाही में कम से कम 560 लोगों की मृत्यु होने तथा अन्य हजारों लोगों के लापता होने के समाचार मिले हैं, बल्कि सरकारी रिपोर्टों के अनुसार तो मरने वाले लोगों की संख्या 1000 से भी अधिक हो सकती है। यहां तक कि राज्य सरकार आपदा एवं प्रबंधन केन्द्र का मानना है कि मृतकों की संख्या हजारों में हो सकती है क्योंकि केदारनाथ और राज्य के अन्य भागों में लगभग 90 धर्मशालाएं तथा अनेकों होटल अचानक आ गई बाढ़ के प्रवाह में बह गए हैं।

15 जून के दुर्भाग्यपूर्ण दिन और उसके बाद लगभग 40,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में भारी वर्षा, बादलों के फटने, बाढ़ तथा भूस्खलन के कारण रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी और चमोली

मोदी ने किया उत्तराखण्ड के बाढ़ पीड़ित इलाकों का दौरा

15000 लोगों को अपने घर भी भेजा

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बाढ़-पीड़ित उत्तराखण्ड का दौरा किया। उत्तराखण्ड में अपने दो दिन के दौरान श्री मोदी ने न केवल भाजपा कार्यकर्ताओं में भरपूर ऊर्जा प्रदान की बल्कि केदारनाथ, बद्रीनाथ और उत्तरकाशी में राहत कार्यों में जुटे लोगों को भी उत्साहित किया। इतना ही नहीं, उन्होंने लगभग 15000 गुजराती तीर्थयात्रियों को भी अपने घरों को लौटने का भी प्रबंध किया। श्री मोदी ने केदारनाथ में 'नवीनतम टेक्नालॉजी का उपयोग करते हुए' इस ढंग से केदारनाथ मंदिर का निर्माण का भी वचन दिया जिससे भविष्य में कभी भी किसी प्राकृतिक आपदा से मंदिर क्षत-विक्षत नहीं हो सकेगा। श्री मोदी ने न केवल पूरी मेडिकल टीम को हरिद्वार में उतारा, बल्कि इस टीम ने बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों में शिविर भी स्थापित कर लिए। श्री मोदी ने गुजरात के उच्च वरिष्ठ आइएएस अफसरों को नियुक्त किया जिनमें से एक दिल्ली और दूसरा उत्तराखण्ड में रहेगा ताकि राहत कार्यों का समन्वय किया जा सके। ■

जिलों में विनाश की लीला देखी जहां देश भर के हजारों चार धाम के यात्री ठहरे हुए थे। इन यात्रियों में विदेशी नगारिक भी शामिल हैं। उस दिन जीवित बचे लोगों के आंखों के सामने ही बाढ़ के प्रवाह ने हर चीज अपने में समा ली। भागीरथी, अलकनंदा और गंगा के किनारे निर्मित बड़े-बड़े अपार्टमेंट ब्लाक और भू-स्खलन के कारण बुरी तरह से गिर गए और कारें तथा ट्रक सभी बाढ़ में बह गए और इस तरह राज्य के ऊपरी इलाकों की हालत भी दयनीय हो गई और सभी मात्र मृत्यु का नजारा देखने पर विवश होकर इस विनाशलीला को चुपचाप देखते रह गए।

राज्य सरकार के कर्मचारी अभी केदारनाथ घाटी को जाने के लिए भू-स्खलन से टूटी सड़कों को जोड़ने में जुटे हुए हैं, क्योंकि यह क्षेत्र सबसे अधिक क्षतिग्रस्त हुआ है और यहां पर हजारों तीर्थ-यात्री फंसे हुए हैं। बच कर आए कुछ लोगों का कहना है कि उन्होंने केदारनाथ घाटी में हजारों की संख्या में हर तरफ बिखरे शवों का नजारा देखा है। बचाव के कार्य में आर्मी, आईटीबीपी और एनडीआरएफ के हजारों सैनिक जुटे हैं तथा वायुसेना के हेलीकाप्टर हिमालय के इन क्षेत्रों से जीवितों को बचाने में जुटे हैं। अभी तक लगभग 80,000 लोगों को बचाया जा सका है और भारतीय रेल इन विनाशकारी क्षेत्रों से लोगों को घर पहुंचाने के लिए विशेष रेलगाड़ियां चला रही है। एक सूत्र के अनुसार मालूम हुआ है कि लगभग 8000 लोगों को 60 हेलीकाप्टरों की मदद से बाढ़ की चपेट से बचा कर बाहर लाया गया है।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, उत्तराखण्ड के विभिन्न भागों में खाने और पेयजल के लिए बुरी तरह तरस रहे हैं, जिसके कारण मृतकों की संख्या में काफी बड़ा इजाफा हो सकता है। गंगोत्री, यमुनोत्री और हनुमान चट्टी के यात्री अभी तक भी बाढ़ में फंसे हुए हैं और सड़कों में बाधा पड़ने के कारण उनके पास तक राहत दलों का पहुंचना और भी मुश्किल हो गया है। राहत कार्यों के दौरान उत्तराखण्ड सरकार की निष्क्रियता तो सामने आ ही रही है, जिससे अब अन्य राज्यों ने भी इसकी मदद के लिए अपने हाथ आगे बढ़ा दिए हैं। कई राज्यों ने सहायता की घोषणा की है, परन्तु आश्चर्य यह है कि उत्तराखण्ड में सरकार समझ ही नहीं पा रही है कि राष्ट्रीय आपदा के बाद बनी परिस्थिति में इस सहायता का उपयोग कैसे किया जाए।

जितनी भारी मात्रा में यह विनाशलीला हुई है, उसे देखते हुए इसे हिमालयी त्रासदी का नाम ही दिया जा सकता है। जैसे-जैसे बचाव का कार्य चल रहा है लोग और विशेष रूप से आर्मी अब उन क्षेत्रों में पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं, जिन क्षेत्रों में आपदा का प्रभाव नहीं हुआ है, परन्तु उत्तराखण्ड की इस आपदा में एक के बाद एक दूसरी त्रासदी पैदा होकर भूख से मरने वालों की संख्या भी बढ़ती जा रही है।

हाल ही में, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने उत्तराखण्ड के बाढ़-पीड़ित जिलों का हवाई सर्वेक्षण किया। अपने इस हवाई दौरे के बाद मीडिया संवाददाताओं से बात करते हुए उन्होंने कहा कि ''यह त्रासदी सचमुच एक असाधारण त्रासदी है जिसमें हजारों लोगों की जानें चली गई हैं, इसलिए इसे एक राष्ट्रीय आपदा घोषित किया जाना चाहिए। ■

उत्तराखण्ड आज राष्ट्रीय आपदा के शिकंजे में : राजनाथ सिंह

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 19 जून को पार्टी की उत्तराखण्ड इकाई से कहा कि वह अपने संगठनात्मक कार्यों को स्थगित करें और राज्यभर में बाढ़-पीड़ित लोगों की सहायता और राहत कार्यों में जुट जाए। श्री सिंह ने आगे कहा कि ''आज उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश राष्ट्रीय आपदा से जूझ रहा है। मैं केन्द्र और राज्य सरकारों से तुरंत राहत पहुंचाने के लिए आग्रह करता हूं।'' उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं से भी भारी बाढ़ और भू-स्खलन से प्रभावित लोगों को तुरंत मदद और राहत पहुंचाने की अपील की।

सुषमा स्वराज ने सेना का उपयोग करने हेतु गृहमंत्री से किया अनुरोध

उत्तराखण्ड में आपदा के कारण पैदा हुई विनाश स्थिति को देखते हुए लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने तुरंत ही गृहमंत्री भी सुशील कुमार शिंदे से राज्य में बचाव कार्यों के लिए सेना का उपयोग करने के लिए कहा है। श्रीमती स्वराज ने श्री शिंदे से टेलीफोन पर बात करते हुए उत्तराखण्ड में बाढ़ की स्थिति और वहां विभिन्न भागों में फंसे लोगों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि श्री शिंदे ने हर प्रकार की सहायता देने का वचन दिया। बाद में श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि ''परन्तु यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हजारों लोगों के प्राण चले गए हैं और अभी तक भी कोई बचाव कार्य नहीं हुआ है।''

बेहतर कल के लिए जरूरी है आपातकाल की याद

आपातकाल लोकतंत्र का काला अध्याय है। तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के कहने पर आपातकाल की घोषणा की थी। हम यहां आपातकाल से सम्बंधित विवरण प्रकाशित कर रहे हैं, जो लेखकद्वय : प्र.ग. सहस्रबुद्धे एवं माणिकचन्द्र वाजपेयी की पुस्तक ''आपातकालीन संघर्ष-गाथा'' से साभार प्रस्तुत है :

1. **1 जनवरी 1974 :** गुजरात में छात्र आंदोलन प्रारंभ।
2. **6 अप्रैल 1974 :** सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध जयप्रकाश नारायण का भाषण।
3. **29 जुलाई 1974 :** इलाहाबाद में अखिल भारतीय युवा सम्मेलन (All India Youth Conference) में जयप्रकाश नारायण का भाषण।
4. **19 नवंबर 1974 :** पटना के गांधी मैदान में जयप्रकाश नारायण की विशाल जनसभा।
5. **2-3 जनवरी 1974 :** रेलमंत्री ललित नारायण मिश्र तथा 22 अन्य व्यक्ति समस्तीपुर रेलवे स्टेशन के पास एक बम विस्फोट में घायल (2 जनवरी) तथा ललितनारायण मिश्र की मृत्यु (3 जनवरी)। देश के अनेक नेताओं द्वारा इस हिंसात्मक कार्यवाही की निंदा तथा अनेक विपक्षी नेताओं द्वारा विस्फोट के कारण की गंभीर जांच की मांग।
6. **18 जनवरी 1975 :** सभी (कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया को छोड़कर) विपक्षी दलों द्वारा जयप्रकाश नारायण के समर्थन में 10 लाख लोगों को 'जनता मार्च' संसद भवन तक ले जाने का निश्चय।
7. **3-4-5 मार्च 1975 :** भारतीय जनसंघ का दिल्ली में 20वां अधिवेशन। वहां अतिथि के रूप में गये जयप्रकाश नारायण द्वारा भाषण (5 मार्च) में जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से अपने विगत एक वर्षीय सम्बन्ध में प्राप्त अनुभवों के आधार पर उनकी प्रशंसा तथा कम्युनिस्टों और इंदिरा-समर्थकों द्वारा उन पर लगाये गये फासिस्ट व प्रतिक्रियावादी जैसे मिथ्या आरोपों का खंडन।
8. **7 मार्च 1975:** सभी (कम्युनिस्ट पार्टी के अतिरिक्त) विरोधी दलों की ओर से लोकसभा में जयप्रकाश नारायण इत्यादि के हस्ताक्षरों से युक्त मांग-पत्र प्रस्तुत (जिसमें 6 मार्च को भेंट किये गये मांग-पत्र की सात बातें सम्मिलित)।
9. **18 मार्च 1975 :** बिहार छात्र समितियों और जनसंघर्ष समितियों द्वारा तीन किलोमीटर लम्बा 'जनता मार्च' विधान-सभा भवन तक तथा गांधी मैदान में 'संपूर्ण क्रांति' की प्रथम वर्षगांठ मनाने हेतु सार्वजनिक सभा। आंदोलन में सरकारी दमन से 100 लोग मारे गये और 20,000 बन्दी बनाये गये।
10. **18 मार्च 1975 :** अपने विरुद्ध प्रस्तुत राजनारायण की चुनाव-याचिका के कारण इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वक्तव्य देने हेतु इंदिरा गांधी उपस्थित।
11. **13 अप्रैल 1975 :** मोरारजी देसाई ने अपना अनशन (6 अप्रैल से चला हुआ) तब तोड़ा जब उन्हें इंदिरा गांधी का पत्र प्राप्त हो गया जिसमें यह आश्वासन दिया गया था कि गुजरात विधान-सभा के चुनाव 7 जून के आसपास करा दिये जायेंगे और आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (मीसा) का प्रयोग वैध राजनीतिक गतिविधियों वाले लोगों के विरुद्ध नहीं होगा।
12. **7 मई 1975 :** लोकसभा में विरोधी दलों द्वारा एक बिल प्रस्तुत जिसमें आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (मीसा) की इस व्यवस्था का कि 2 वर्ष तक किसी को भी राष्ट्र-विरोधी तत्व कहकर नजरबंद रखा जा सकता है, संशोधन करने की दृष्टि थी।
13. **12 जून 1975 :** (क) गुजरात विधानसभा के लिए हुए निर्वाचन के परिणाम घोषित(जनता पक्ष (फ्रंट) की विजय और कांग्रेस की पराजय (182 में केवल 72 कांग्रेस)।
14. **12 जून 1975 :** (ख) इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जगमोहनलाल सिन्हा ने राजनारायण की चुनाव याचिका पर निर्णय देते हुए प्रधानमंत्री इंदिरागांधी के रायबरेली से हुए निर्वाचन को रद्द घोषित किया तथा उन्हें 6 वर्ष तक निर्वाचन में भाग लेने के लिए अयोग्य भी घोषित किया।
15. **20 जून 1975 :** इंदिरा गांधी ने सर्वोच्च न्यायालय

में याचिका प्रस्तुत की। बोट क्लब पर कांग्रेस द्वारा आयोजित जनसभा में इंदिरा गांधी ने 'बड़ी शक्तियों' पर उन्हें अपदस्थ करने तथा बर्बाद करने के लिए किये जा रहे एक बड़े षड्यंत्र का आरोप लगाया।

16. **14 जून 1975 :** विरोधी दलों की राष्ट्रीय कार्यकारिणियों के सदस्यों की मोरारजी देसाई के निवास-स्थान पर अगली कार्य-रेखा निश्चित करते हुए इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री बने रहने के विरोध में देशव्यापी सत्याग्रह का निर्णय लिया गया।

17. **25 जून 1975 (दिन में) :** 'लोकससंघर्ष समिति' बनायी गई, जिसमें मोरारजी देसाई अध्यक्ष, नानाजी देशमुख सचिव तथा अशोक मेहता कोषाध्यक्ष बने।

18. **25 जून 1975 (सांयकाल) :** दिल्ली के रामलीला मैदान में हुई ऐतिहासिक विशाल जनसभा में जयप्रकाश नारायण ने 'शांतिपूर्ण सत्याग्रह' का आह्वान किया।

19. **25 जून 1975 :** आपातस्थिति की घोषणा पर अर्धरात्रि के लगभग राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षर। संविधान की धारा 352 के खंड 1 के अनुसार आंतरिक गड़बड़ियों से भारत की सुरक्षा को उत्पन्न संकट के नाम पर की गयी इस घोषणा की सार्वजनिक जानकारी होने से पूर्व ही जयप्रकाश नारायण तथा अन्य अनेक प्रमुख नेताओं को बंदी बना लिया गया। लोकतंत्र पर कलंक तथा आपातकालीन दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास की यह प्रथम अभागी रात्रि थी।

20. **27 जूप 1975 :** राष्ट्रपति ने एक 'लक्ष्मीकांत झा. .. को, दल से निलंबित किया।' आदेश प्रसारित किया (संविधान की धारा 359 (1) के अंतर्गत) जिससे संविधान के तीन अनुच्छेदों (14, 21, 22) द्वारा दिये गए मौलिक अधिकारों का उपयोग करने के लिए न्यायालय से मांग करने का नागरिक अधिकार स्थगित कर दिया गया। छः विरोधी संसद-सदस्य (महावीर त्यागी, प्रकाशवीर शास्त्री, जगदीश माथुर आदि) राष्ट्रपति से मिले और परिस्थिति पर चर्चा की। 'द्रविड़ मुनेत्र कषगम्' ने आपातस्थिति समाप्त करने तथा बंदी नेताओं को मुक्त करने की मांग वाले प्रस्ताव पारित किये।

21. **30 जून 1975 :** (क) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक बालासाहब देवरस बंदी।

22. **4 जुलाई 1975 :** केन्द्रीय सरकार ने भारतीय सुरक्षा नियमों (1971) के अन्तर्गत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित 26 संस्थाओं पर प्रतिबंध लगाया।

23. **21 जुलाई 1975 :** (क) लोकसभा व राज्य सभा के विशेष अधिवेशन प्रारंभ।

24. **21 जुलाई 1975 :** (ख) 'लोकसंघर्ष समिति' के सत्याग्रह (16 जुलाई से प्रारंभ) के अन्तर्गत लाला हंसराज गुप्त ने पटेल चौक दिल्ली में सत्याग्रह किया।

25. **25 जुलाई 1975 :** लोक संघर्ष समिति के दस दिवसीय सत्याग्रह का अंतिम दिन।

26. **1 अगस्त 1975 :** (क) राष्ट्रपति द्वारा संविधान में 38वें संशोधन बिल को (जो लोकसभा में 23 जुलाई व राज्यसभा को स्वीकृत हुआ था) स्वीकृति। इस कानून से आपातस्थिति की घोषणा को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती थी तथा राष्ट्रपति, राज्यपालों व संघक्षेत्रों के प्रशासन के अधिकारों को न्यायिक परीक्षण से परे कर दिया गया।

27. **5 अगस्त 1975 :** राष्ट्रपति ने निर्वाचन कानून (संशोधन) बिल पर जो दोनों सदनों से स्वीकृत हो चुका था, हस्ताक्षर किये। इस कानून से राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया कि वह निर्वाचन आयुक्त से परमर्श करके भ्रष्ट आचरणों के आरोप में किसी व्यक्ति को निर्वाचनार्थ अयोग्य घोषित करने की अवधि निश्चित करे। इस कानून को पूर्वव्यापी प्रभाव (restrospective effect) वाला रखा गया।

28. **16 अगस्त 1975 :** राष्ट्रपति ने संविधान में 39वें संशोधन बिल पर हस्ताक्षर किये। इस कानून से व्यवस्था कर दी गयी कि प्रधानमंत्री, लोकसभाध्यक्ष, राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति के निर्वाचन को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। इसके अनुसार पहले से ऐसे चल रहे मुकदमों को भी रद्द कर दिया गया। इसके द्वारा निर्वाचन-संबंधी नियमों, मीसा आदि को न्यायालयों में चुनौती से सुरक्षित कर दिया गया था।

29. **28 अगस्त 1975 :** लोक संघर्ष समिति के सचिव नानाजी देशमुख बंद।

30. **16 सितंबर 1975 :** लोकसंघर्ष समिति के नेताओं की बंबई में बैठक। इस बैठक में बंदी हो गये नानाजी देशमुख के स्थान पर, रवीन्द्र वर्मा को लोक संघर्ष समिति का सचिव बनाया गया।

31. **2 अक्तूबर 1975 :** (क) दिल्ली तिहाड़ जेल में आपातस्थिति-विरोधी बंदियों पर भीषण लाठीचार्ज।

(ख) गांधी जयंती के कारण दिल्ली में गांधी समाधि (राजघाट) पर जनता की भीड़। 'सर्वोदय कार्यकर्ता फोरम' की ओर से सभा करने का प्रयत्न। आचार्य

कृपलानी पूर्व योजना के अनुसार उसके लिए उपस्थित थे। 'जयप्रकाश की जय' के नारे बहुत लगे। पुलिस ने बल-प्रयोग किया और सभा नहीं होने दी।

(ग) मद्रास में कामराज नाडार का देहान्त।

32. **12 अक्तूबर 1975 :** अहमदाबाद में सिविल लिबर्टीज कांफ्रेंस हुई।

33. **6 नवम्बर 1975 :** लोक संघर्ष समिति की ओर से प्रधानमंत्री को पत्र द्वारा सूचना कि सत्याग्रह 14 नवम्बर से प्रारंभ होगा।

34. **7 नवंबर 1975 :** सर्वोच्च न्यायालय में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध इंदिरा गांधी की अपील पर इंदिरा गांधी के पक्ष में निर्णय।

35. **12 नवंबर 1975 :** गंभीर अस्वस्थता के कारण जयप्रकाश नारायण कारावास से मुक्त किये गये।

36. **14 नवंबर 1975 :** (क) लोक संघर्ष समिति का ऐतिहासिक सत्याग्रह प्रारंभ।

(ख) राष्ट्रपति ने मीसा (चतुर्थ संशोधन) अध्यादेश, 1975 प्रसारित किया जिसके अनुसार मीसा के किसी भी नजरबंदी को अवधि रद्द या समाप्त होने पर पुनः उसी कानून में बंद किया जा सकता था।

37. **17 नवंबर 1975 :** डी.आई.जी. कांफ्रेंस का उद्घाटन करते हुए इंदिरा गांधी ने कहा कि गुप्तचर विभाग का यह कथन कि रा.स्व.संघ दब गया है, मिथ्या सिद्ध हुआ क्योंकि यह सत्याग्रह वास्तव में संघ ही कर रहा है।

38. **20 नवंबर 1975 :** 14 नवंबर से प्रारंभ सत्याग्रह की अखंड श्रृंखला में ही दिल्ली विश्वविद्यालय में बड़ी धूमधाम से सत्याग्रह।

39. **12 दिसंबर 1975 :** चांदनी चौक (दिल्ली) में महिलाओं के जत्थे का नेतृत्व करते हुए मणिबेन पटेल (सरदार पटेल की पुत्री, सांसद) द्वारा सत्याग्रह।

40. **8 जनवरी 1976 :** राष्ट्रपति का आदेश प्रसारित जिसके द्वारा संविधान की धारा 19 द्वारा प्रदत्त मूलभूत अधिकारों की समाप्ति, न्यायालय में जाने का नागरिकों का अधिकार आपातकाल रहने तक स्थगित किया गया।

41. **16-18 जनवरी 76 :** विनोबा द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय आचार्य-सम्मेलन पवनार में संपन्न।

42. **26 जनवरी 1976 :** ऐतिहासिक सत्याग्रह समाप्त।

43. **1 फरवरी 1976 :** 'हिन्दुस्तान समाचार' सहित चार समाचार एजेंसियों का विलय करके 'समाचार' नामक नयी एजेंसी प्रारंभ।

44. **12 फरवरी 1976 :** लोक संघर्ष समिति के सचिव रवीन्द्र वर्मा बंदी।

45. **24 फरवरी 1976 :** मुक्त होकर मोरारजी देसाई दिल्ली में अपने निवास-स्थान पर।

46. **26 फरवरी 1976 :** दिल्ली में अटलबिहारी वाजपेयी अपने निवास स्थान पर, किन्तु अभी भी वर्दीधारी पुलिस की घर पर निरन्तर निगरानी।

47. **20-21 मार्च 1976 :** बंबई में जनसंघ, संगठन कांग्रेस, सोशलिस्ट, भारतीय लोकदल, डी.एम.के., आर.एस.पी. और कुछ निर्दलीय राजनीतिक नेताओं की बैठक जिसमें आचार्य कृपलानी भी रहे। विपक्षी राजनीतिक दलों के एकत्रीकरण का निश्चय।

48. **23 मार्च 1976 :** सी.बी.आई. द्वारा 'बड़ौदा डाईनामाइट षड्यंत्र केस' की जांच प्रारंभ।

49. **25 मई 1976 :** बंबई में जयप्रकाश नारायण द्वारा एक प्रेस कांफ्रेंस में एक नये राष्ट्रीय दल के निर्माण की घोषणा। इस पार्टी में संगठन कांग्रेस, भारतीय लोकदल, समाजवादी दल और भारतीय जनसंघ का विलय होगा, यह घोषत किया।

50. **13 जून 1976 :** विनोबा के आश्रम पर पुलिस का छापा।

51. **19-20 जून 1976 :** बंबई में 'सिटीजन्स फॉर डेमोक्रेसी' का वार्षिक सम्मेलन।

52. **9 अगस्त 1976 :** जयप्रकाश नारायण की राष्ट्रपति से दिल्ली में भेंट।

53. **10 अगस्त 1976 :** सुब्रह्मण्यम् स्वामी राज्यसभा में उपस्थित हुए और फिर अदृश्य, किन्तु बंदी नहीं किये जा सके।

54. **15 अगस्त 1976 :** गुजरात में हड़ताल तथा दांडी मार्च।

55. **20 सितंबर 1976 :** भारत सरकार की आपातस्थिति-घोषणा तथा दमन-नीति के विरोध में फिलाडेल्फिया से एक पद-यात्रा प्रारंभ जो 1 अक्तूबर 1976 को राष्ट्रसंघ भवन के बाहर पहुंच कर समाप्त होगी। 120 मील की इस पदयात्रा के प्रारंभ होने से पूर्व मकरन्द देसाई और मैक आर्थर के भाषण हुए। 1 व 2 अक्तूबर को संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने भूख-हड़ताल तथा 2 को ही सार्वजनिक सभा की घोषणा।

56. **14 अक्तूबर 1976 :** वर्धा जिला के एक प्रमुख

सर्वोदयी कार्यकर्ता प्रभाकर शर्मा द्वारा सरकारी दमननीति के विरोध में आत्मदाह। आत्मदाह से पूर्व आचार्य विनोबा को पत्र तथा इंदिरा गांधी के नाम एक विस्तृत पत्र।

57. **7 नवंबर 1976 :** पटना की एक जनसभा में जयप्रकाश नारायण का ओजस्वी भाषण।

58. **18 जनवरी 1977 :** प्रधानमंत्री इंदिरागांधी का आकाशवाणी पर भाषण, लोकसभा भंग करने और मार्च 1977 में महानिर्वाचन करने के निर्णय की घोषणा।

59. **20 जनवरी 1977 :** (क) जनता पार्टी का निर्माण।

(ख) आपातकाल की घोषणा के बाद दिल्ली तथा अन्यत्र प्रथम सार्वजनिक सभा। रामलीला मैदान (दिल्ली) में जनता पार्टी का विशाल जनसभा। पटना में जयप्रकाश नारायण, बंबई में लालकृष्ण आडवाणी, जयपुर में चन्द्रशेखर तथा लखनऊ में चरणसिंह के भाषण।

60. **2 फरवरी 1977 :** जगजीवनराम ने केन्द्रीय मंत्री पद से त्यागपत्र दिया तथा कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता भी त्याग दी।

61. **6 फरवरी 1977 :** दिल्ली में जयप्रकाश नारायण का रामलीला मैदान की विशाल सभा में भाषण। इस सभा में जगजीवनराम ने भी भाषण दिया।

62. **11 फरवरी 1977 :** राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद की मृत्यु।

63. **13 मार्च 1977 :** जयप्रकाश नारायण का मतदाताओं से अंतिम निवेदन।

64. **16-20 मार्च 1977 :** महानिर्वाचन।

65. **21. मार्च 1977 :** (क) जनता पार्टी की विजय, इंदिरा गांधी तथा संजय गांधी और कांग्रेस की पराजय। कार्यकारी राष्ट्रपति बी.डी. जत्री द्वारा आपात स्थिति समाप्ति की घोषणा।

66. **22 मार्च 1977 :** (क) संघ सहित विविध संगठनों पर लगे प्रतिबंध समाप्त, नेता मुक्त।

(ख) इंदिरा गांधी का प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र।

67. **24 मार्च 1977 :** (क) दिल्ली में राजघाट पर जनता पार्टी के संसद-सदस्यों द्वारा निष्ठा की शपथ-ग्रहण।

(ख) मोरारजी भाई देसाई द्वारा प्रधानमंत्री पद की शपथ-ग्रहण।

(ग) सायंकाल को दिल्ली के रामलीला मैदान में जनता पार्टी की ऐतिहासिक जनसभा।

68. **13 अप्रैल 1977 :** बाला साहब देवरस का नयी दिल्ली स्टेशन पर भव्य स्वागत जिसमें अनेक मुस्लिम नेता भी सम्मिलित। ■

उत्तर प्रदेश

तुष्टीकरण के खिलाफ जनाक्रोश को वोट में बदलेंगे : अमित शाह

यूपीए सरकार के तुष्टीकरण के खिलाफ पनपे जनाक्रोश को वोटों में तब्दील कर भाजपा केंद्र की सत्ता में वापसी करेंगी। यह घोषणा भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव व प्रदेश प्रभारी श्री अमित शाह ने 13 जून को लखनऊ स्थित भाजपा मुख्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में की।

दो दिन पार्टी पदाधिकारियों व प्रमुख नेताओं से विमर्श करने के बाद श्री शाह का मानना था कि उत्तर प्रदेश में हालात भाजपा के लिए अनुकूल है। प्रदेश में परिर्वतन की लहर है, दिल्ली का रास्ता लखनऊ से होकर जाएगा। यूपीए सरकार के कार्यकाल में हुए 12 लाख करोड़ के घोटालों व भ्रष्टाचार और सपा सरकार द्वारा आतंकियों की रिहाई, गौ तस्करी, तुष्टीकरण की नीति से सांप्रदायिकता बढ़ी है। केंद्र के काले कारनामों का साथ देने वाली सपा-बसपा को भी इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।

कांग्रेस पर निशाना साधते हुए श्री शाह ने घोटालों व बजट का नया आंकड़ा भी समझाया। मनमोहन सरकार में हुए 12 लाख करोड़ के घोटाले की धनराशि को यूपी के छह वर्षों के बजट के बराबर बताया। कानून व्यवस्था और पुलिस कर्मियों की बढ़ती हत्याओं का जिक्र करते हुए सरकार को हर मोर्चे पर फेल करार दिया।

एनडीए में बिखराव के सवाल पर श्री शाह ने दो टूक कहा कि किसी दल के आंतरिक मसलों में दखल का हक किसी को नहीं। भाजपा नेतृत्व जो फैसला ले चुका है, उसमें किसकी सहमति जरूरी नहीं। केंद्र में तीसरा मोर्चा बनाने की संभावना को खारिज करते हुए श्री शाह ने भाजपा की स्थिति लोकसभा चुनाव में बेहतर होने का दावा किया। ■

14 वर्षों के कांग्रेसी कुशासन के बाद दिल्ली परिवर्तन के लिए तैयार : डॉ. जोशी

भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में एक राजनैतिक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें दिल्ली की कांग्रेस सरकार को सभी मोर्चों पर पूर्णत: विफल बताया गया। कार्यकारिणी में दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की भी मांग की गई।

भाजपा दिल्ली प्रदेश महामंत्री श्री रमेश बिधूड़ी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया और विधायक श्री सुभाष सचदेवा ने उसका समर्थन किया।

गत 18 जून को संपन्न प्रदेश कार्यकारिणी की इस बैठक में भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री रामलाल, राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार, नेता प्रतिपक्ष दिल्ली विधानसभा प्रो. विजय कुमार मलहोत्रा, राष्ट्रीय मुख्यालय प्रभारी और पूर्व सांसद प्रो. ओ पी कोहली, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री मांगे राम गर्ग और श्री विजेन्द्र गुप्ता, राष्ट्रीय मंत्री श्री श्याम जाजू, सुश्री आरती मेहरा, वाणी त्रिपाठी, पूर्व मंत्री दिल्ली और वर्तमान हरियाणा प्रभारी प्रो. जगदीश मुखी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ. नंद किशोर गर्ग, श्री प्रवेश कुमार, श्री तुलसी अग्रवाल और नगर निगमों के नेता सम्मिलित थे।

बैठक को सम्बोधित करते हुये पूर्व भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने कहा कि दिल्ली में चुनाव की तैयारी करते समय पार्टी को समाज के कमजोर वर्गों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि दिल्ली 14 वर्षों के कांग्रेसी कुशासन के बाद सत्ता परिवर्तन के लिए तैयार है। दिल्ली विधानसभा चुनाव में विजय से पार्टी को केन्द्र में सरकार बनाने में सहायता मिलेगी।

बैठक को सम्बोधित करते हुये दिल्ली भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री विजय गोयल ने कहा "भाजपा दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिये जाने के पक्ष में है क्योंकि इससे एजेंसियों की बहुलता समाप्त होगी। दुर्भाग्यवश कांग्रेस सरकार ने दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाने के लिए कुछ नहीं किया।"

विधानसभा चुनावो में मुख्य मुद्दे होंगे पानी, बिजली, गांवों में विकास की कमी, अनधिकृत कालोनियां, झुग्गी-झोंपड़ी और स्लम बस्तियां। कांग्रेस पहले से ही इस मामले में बचाव की मुद्दा में है क्योंकि वह इन मुद्दों पर असफल रही है।

श्री गोयल ने आगे कहा ''हम पूरी दिल्ली के 11000 पोलिंग बूथों पर पार्टी कार्यकर्ताओं को जुटाने के प्रयास कर रहे हैं। सभी विधानसभा सीटों पर पर्यवेक्षक और सभी 14 जिलों के लिए प्रभारी नियुक्त किये हैं। अब पार्टी चुनाव के लिए पूर्णत: तैयार है।"

इसके साथ हम जनता से जुड़े हुये मुद्दों पर संपर्क कार्यक्रम भी चला रहे हैं। पार्टी के भीतर और पार्टी के बाहर इस पर प्रतिक्रिया उत्साहवर्धक रही है और इससे पता चलता है कि दिल्ली की जनता सत्ता परिवर्तन चाहती है।"

श्री गोयल ने कहा ''भाजपा विकास का एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत कर रही है जिससे समाज के सभी वर्गों को लाभ होगा। इसमें युवाओं, महिलाओं और समाज के कमजोर वर्गों पर विशेष ध्यान दे रही है।"

श्री राम लाल ने कहा, ''पूरे देश में भाजपा के भीतर अत्यंत उत्साह है। जनता कांग्रेस शासन से तंग आ चुकी है और भाजपा एक सशक्त विकल्प बनकर उभरी है।"

श्री अनंत कुमार ने कहा, ''भाजपा

शेष पृष्ठ 30 पर

बदहाली के गुनहगार

✍ बलबीर पुंज

अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं की तुलना में रुपये की ताकत में लगातार आ रही गिरावट क्या रेखांकित करती है? यदि शरीर का तापमान व्यक्ति के स्वास्थ्य को इंगित करता है तो नि:संदेह देश की मुद्रा वहां की अर्थव्यवस्था का हाल बयान करती है। भाजपानीत राजग के समय में डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत 40 रुपये प्रति डॉलर थी। आज उसकी कीमत साठ रुपये के करीब आ पहुंची है। इसका अर्थ हुआ कि कांग्रेसनीत संप्रग सरकार के कार्यकाल में रुपये की कीमत में 50 प्रतिशत की गिरावट आई है। रुपये की क्रयशक्ति घटने का सीधा अर्थ है कि इससे अंततोगत्वा आम आदमी की जरूरत की हर वस्तु महंगी मिलेगी। आर्थिक आंकड़े संप्रग-2 की नाकामी उजागर कर रहे हैं, किंतु सरकार अपने नौ साल की कथित उपलब्धियों पर जश्न मना रही है।

हाल ही में संप्रग सरकार के पिछले चार साल का रिकार्ड जारी करते हुए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने दावा किया कि उन्हें विरासत में आधा भरा गिलास मिला था, जिसे उन्होंने भरने की पूरी कोशिश की और अभी पूरा भरने में थोड़ी कसर बाकी रह गई है। प्रधानमंत्री के दावे में कितनी सच्चाई है? भाजपानीत राजग सरकार से इस सरकार को जैसी अर्थव्यवस्था हाथ लगी थी उसका विश्लेषण करने पर सरकार के लिए अपनी कथित उपलब्धियों का जश्न मनाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। संसद में संप्रग सरकार का पहला आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन वित्तमंत्री पी. चिदंबरम ने स्वीकार किया था कि उन्हें विरासत में एक मजबूत अर्थव्यवस्था मिली है। मुद्रास्फीति की दर अंकुश में है और रोजगार के यथेष्ट अवसर उपलब्ध हैं। 2004 में सत्ता परिवर्तन के ठीक बाद आयोजित 20वें आर्थिक शिखर सम्मेलन में पी. चिदंबरम ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व में सबसे तेज गति से वृद्धि करने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक बताया था। वित्तमंत्री ने तब कहा था, 'पहली बार भारत को विश्व में एक आर्थिक शक्ति के रूप में पहचाना जा रहा है।' तेजी से विकास कर रही अर्थव्यवस्था पर ग्रहण कैसे लगा?

संसद में संप्रग सरकार का पहला आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन वित्तमंत्री पी. चिदंबरम ने स्वीकार किया था कि उन्हें विरासत में एक मजबूत अर्थव्यवस्था मिली है। मुद्रास्फीति की दर अंकुश में है और रोजगार के यथेष्ट अवसर उपलब्ध हैं। 2004 में सत्ता परिवर्तन के ठीक बाद आयोजित 20वें आर्थिक शिखर सम्मेलन में पी. चिदंबरम ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व में सबसे तेज गति से वृद्धि करने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक बताया था।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की हाल की एक रिपोर्ट के अनुसार 2006-07 में प्रतिस्पर्द्धा की दृष्टि से भारत का दुनियाभर में 42वां स्थान था, जो 2012-13 में गिरकर 56 पर आ गया। आधारभूत संरचना के क्षेत्र में भारत 62वें स्थान से गिरकर 84वें और बिजली के क्षेत्र में 110वें स्थान से गिरकर 144वें स्थान पर आ गया है। यह बदहाली क्यों आई?

राजग को 1997 में सत्ता में आने पर 4.9 प्रतिशत विकास दर वाली अर्थव्यवस्था मिली थी। राजग के कार्यकाल के आखिरी तिमाही में आर्थिक विकास की दर 8.4 प्रतिशत दर्ज की गई थी। नौ सालों के बाद अर्थव्यवस्था पुन: 1997 की स्थिति में पहुंच गई है। औद्योगिक विकास दर 3.1 प्रतिशत है, जबकि विनिर्माण क्षेत्र में विकास दर 1.9 प्रतिशत है। जीडीपी में कृषि का योगदान 1998 और 1999 में क्रमश: 26 और 25 फीसद था, जो संप्रग की पहली पारी की समाप्ति पर गिरकर 18 प्रतिशत और 2011 में 17 प्रतिशत रह गया। राजग के कार्यकाल की समाप्ति पर महंगाई की दर 3.8 प्रतिशत थी, जो 2010 में करीब तीन गुना की रफ्तार से बढ़कर 12 प्रतिशत पर दर्ज हुई। पिछले नौ सालों में भारत के वाह्य कर्ज में तीन गुना बढ़ोतरी हुई है। 2001 में देश पर वाह्य कर्ज 118 अरब डॉलर था। दिसंबर, 2012 में यह बढ़कर 376.3 अरब डॉलर हो गया है, जबकि मार्च, 2012 में यह 345.5 अरब डॉलर था। भारतीय मुद्रा में कहें तो मार्च, 2012 में वाह्य कर्ज 17,65,978 करोड़ रुपये था, जो दिसंबर, 2012 में बढ़कर 20,60,904

करोड़ रुपये हो गया अर्थात् केवल नौ महीनों में वाह्य कर्ज में 16.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आज भारत के हर नागरिक पर 33,000 रुपये का कर्ज है। इसका जिम्मेदार कौन है?

यूपीए सरकार के कार्यकाल में न केवल रुपया गिर रहा है, बल्कि देश की साख भी खाक हो रही है। सरकार से जनता का विश्वास उठा है। वास्तविकता तो यह है कि प्रधानमंत्री ने सरकार तो भले ही चलाई, किंतु आम आदमी की गाढ़ी कमाई से जो राजकोष एकत्र होता है उसे खर्च करने का निर्देश सोनिया गांधी नीत 'राष्ट्रीय सलाहकार परिषद' देती है।

संप्रग सरकार में सत्ता के दो केंद्र होने के कारण ही देश में चारो ओर बदहाली का आलम है। प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठा अर्थशास्त्री विवश है। उसके पास पद है, किंतु शक्ति नहीं है और जिसके पास शक्ति है उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है। अपनी विफलताओं को छिपाने के लिए सरकार लोक-लुभावन योजनाओं का ढिंढोरा पीट चुनावी लाभ लेने के लिए बेताब है।

मनरेगा के बाद अब सरकार खाद्य सुरक्षा बिल को अमलीजामा पहनाने को बेताब है। मनरेगा योजना पर पिछले सात सालों में 19 लाख करोड़ रुपये खर्च किए गए, किंतु मानव श्रम दिवस के सृजन में 26 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। कैग की रिपोर्ट मनरेगा की कलई खोलती है। कैग ने कहा है, 'बिहार, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में भारत के गरीबों की 46 प्रतिशत आबादी बसती है, किंतु मनरेगा योजना के लिए निर्गत कुल राशि का 20 प्रतिशत हिस्सा ही इन राज्यों के लिए स्वीकृत किया गया।' खाद्य सुरक्षा योजना में करीब 1,24,000 करोड़ रुपये हर साल खर्च होंगे। इसका बोझ कौन ढोएगा? देश के गोदामों में हजारों टन खाद्यान्न सड़ जाता है, अदालत ने उन्हें गरीबों में वितरित करने का सुझाव भी दिया था। इस दिशा में कोई तर्कसंगत उपाय क्यों नहीं सोचा गया? वस्तुत: इस सरकार की एकमात्र उपलब्धि भ्रष्टाचार के नित नए आयाम गढ़ना है। कॉमनवेल्थ घोटाले से लेकर कोयला घोटाले तक देश को करीब 6.25 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। कानून को ताक पर रखकर मनमाने तरीके से कोयला ब्लॉक आवंटित किए गए। सरकार का तर्क था कि देश को ऊर्जा संकट से उबारने के लिए यह बहुत जरूरी था। अदालत की फटकार के बाद इसकी सीबीआइ जांच हुई। कई आवंटन निरस्त हुए। जांच की आंच सीधे प्रधानमंत्री तक पहुंच चुकी है। इस मामले में कानूनमंत्री का पहले ही इस्तीफा हो चुका है। अब कोयला घोटाले में कांग्रेस के सांसद नवीन जिंदल पर फर्जी दस्तावेजों के आधार पर कोयला आवंटन लेने और तत्कालीन कोयला राज्यमंत्री दासारी नारायण राव को 2.25 करोड़ रुपये देने के आरोप में सीबीआइ ने केस दर्ज किया है। यहां यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि कोयला आवंटन के सारे खेल के दौरान सभी कोयला राज्यमंत्री जहां कांग्रेसी थे, वहीं कोयला मंत्रालय का प्रभार स्वयं प्रधानमंत्री संभाल रहे थे।

इस सरकार के कार्यकाल में न केवल रुपया गिर रहा है, बल्कि देश की साख भी खाक हो रही है। सरकार से जनता का विश्वास उठा है। वास्तविकता तो यह है कि प्रधानमंत्री ने सरकार तो भले ही चलाई, किंतु आम आदमी की गाढ़ी कमाई से जो राजकोष एकत्र होता है उसे खर्च करने का निर्देश सोनिया गांधी नीत 'राष्ट्रीय सलाहकार परिषद' देती है।

इस परिषद का सारा ध्यान कांग्रेस को चुनावी लाभ दिलाने के लिए लोक-लुभावन नीतियां बनाने पर केंद्रित हैं, जिसके कारण न केवल राजकोष पर भारी बोझ बढ़ा है, बल्कि पटरी से उतर चुकी अर्थव्यवस्था उसे ढोने में नाकाम साबित हो रही है। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं)

(दैनिक जागरण से साभार)

पृष्ठ 7 का शेष...

मुकर्जी स्मृति न्यास के अध्यक्ष व सांसद श्री वेंकैया नायडू ने की व संचालन न्यास के सचिव डॉ. नंदकिशोर गर्ग ने किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व सांसद श्री प्रभात झा ने स्वागत भाषण किया तो अंत में न्यास के कोषाध्यक्ष श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री विजय कुमार मल्होत्रा, भाजपा राष्ट्रीय सचिव डॉ. अनिल जैन, भाजपा मुख्यालय प्रभारी श्री ओमप्रकाश कोहली, भाजपा संसदीय दल के कार्यालय सचिव श्री रामकृपाल सिन्हा, भाजपा महिला मोर्चा की प्रभारी श्रीमती मृदुला सिन्हा, सांसद श्री अशोक अर्गल, दिल्ली प्रदेश भाजपा महामंत्री श्री रमेश बिधूड़ी सहित अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। ■

भयावह आर्थिक तस्वीर

✍ हृदयनारायण दीक्षित

अर्थ का अनर्थ यों ही नहीं होता। अर्थशास्त्री ही अनर्थ के जिम्मेदार होते हैं। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अर्थशास्त्र के विद्वान हैं। उन्होंने कहा था कि अच्छी राजनीति और अच्छी अर्थव्यवस्था के बीच कोई भेदभाव नहीं होता। संप्रग अच्छी राजनीति और भारत निर्माण का दावेदार है, लेकिन अर्थव्यवस्था की तस्वीर भयावह है। भारत की मुद्रा-रुपये की हैसियत रसातल में है। अब 58 रुपये एक डॉलर के बराबर हैं। इससे कच्चे तेल के आयात का खर्च बढ़ेगा, पेट्रोल डीजल की कीमतें बढ़ेंगी, महंगाई और बढ़ेगी। 8 प्रतिशत से ज्यादा विकास दर का लक्ष्य था, लेकिन बीती जनवरी से मार्च 2013 की तिमाही में यह सिर्फ 4.8 प्रतिशत ही थी। पी. चिदंबरम ने वित्तमंत्री का पदभार संभालते समय अर्थव्यवस्था को सुधारने का आश्वासन दिया था, लेकिन 2013 का आधा साल बीत गया, सुधार की बात तो दूर अर्थव्यवस्था अब खाई में है। विकास दर बीते 10 साल के न्यूनतम स्तर पर है और औद्योगिक विकास दर पिछले 20 साल की न्यूनतम तलहटी में। चालू खाते का घाटा चिंताजनक है। चिदंबरम ने अपने बजट भाषण में इस घाटे को सबसे बड़ी चुनौती बताया था। संप्रग राजनीति के दिशाभ्रम से अर्थव्यवस्था आइसीयू में है।

मनमोहन अर्थशास्त्र में इस सबका उपचार विदेशी निवेश है, लेकिन विदेशी निवेशक सरकारी तंत्र की कठिनाइयों से परेशान हैं। संप्रग सरकार बाहरी समर्थन से जीवित है। यहां स्थिरता और जवाबदेही का अभाव है। भारतीय निवेशक भी अन्य देशों में पूंजी निवेश कर रहे हैं। देश के महानगरीय-नगरीय क्षेत्र का विस्तार हुआ है। मध्यवर्गीय उपभोक्ता समाज बढ़ा है। शिक्षित और श्रमशील युवा बढ़े हैं, लेकिन केंद्र सरकार पूंजी निवेश का सहज व्यावसायिक वातावरण बनाने में असफल रही है। नतीजा सामने है। दुनिया के कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में से सिर्फ 0.8 प्रतिशत ही भारत में आया है। विकासशील देशों में हो रहे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में भी भारत का हिस्सा केवल तीन प्रतिशत ही है। निर्यात और आयात नीति का भी अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ा है। निर्यात घटा है। आयात बढ़ा है। सोना, खाद्य तेल और उपभोक्ता वस्तुओं का अंधाधुंध आयात है। सोने के आयात को घटाने की सरकारी कोशिशें नाकाम रहीं। प्रधानमंत्री सहित ढेर सारे अर्थशास्त्री हैं तो भी अर्थव्यवस्था डूब रही है। अर्थव्यवस्था राजनीतिक व्यवस्था का दर्पण होती है। जैसी राजनीति वैसी ही अर्थव्यवस्था। केंद्र में सकारात्मक निर्णय की इच्छाशक्ति नहीं है। हर समस्या पर समिति बनाने से समस्या का रूप आकार बढ़ता है, लेकिन समितियां बनाना इस सरकार का मुख्य काम है। आधारभूत ढांचे वाली परियोजनाओं के निस्तारण के लिए प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में समिति बनी। समितियां कुछ नहीं करतीं। 7 लाख करोड़ की 215 परियोजनाएं लंबे समय से अटकी हुई हैं। ढांचागत योजनाओं में भूमि अधिग्रहण, पर्यावरण विभाग की अनुमति आदि अनेक बाधाएं हैं। 1991 के पहले लाइसेंस और परमिट राज को भ्रष्टाचार का मूल माना जाता था। आर्थिक उदारीकरण की नीतियों के चलते ऐसे प्रतिबंध प्राय: हट गए, लेकिन भ्रष्टाचार और घोटालों की संख्या व धनराशि बढ़ती गई। बोफोर्स घोटाला 64 करोड़ का था, तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी आरोपी थे। कोयला घोटाला लाखों करोड़ का है, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह इसके लपेटे में हैं। 2जी घोटाला भी 1.76 लाख करोड़ का था। संप्रग सरकार ने घोटालों के माध्यम से एक समानांतर अर्थव्यवस्था चलाई है। सरकारी नीति नियंताओं का समय घोटाला अर्थव्यवस्था को चलाने और इससे निपटने

मनमोहन अर्थशास्त्र में इस सबका उपचार विदेशी निवेश है, लेकिन विदेशी निवेशक सरकारी तंत्र की कठिनाइयों से परेशान हैं। संप्रग सरकार बाहरी समर्थन से जीवित है। यहां स्थिरता और जवाबदेही का अभाव है। भारतीय निवेशक भी अन्य देशों में पूंजी निवेश कर रहे हैं। देश के महानगरीय-नगरीय क्षेत्र का विस्तार हुआ है। मध्यवर्गीय उपभोक्ता समाज बढ़ा है। शिक्षित और श्रमशील युवा बढ़े हैं, लेकिन केंद्र सरकार पूंजी निवेश का सहज व्यावसायिक वातावरण बनाने में असफल रही है।

में ही खर्च हो जाता है। वे देश की ध्वस्त अर्थव्यवस्था पर गौर ही नहीं करते।

अर्थव्यवस्था स्वतंत्र और निरपेक्ष नहीं होती। यह राजनीति का ही भाग और विस्तार होती है। जैसी राजनीति वैसी ही अर्थनीति है। 1991 के पहले नेहरू की राजनीति और अर्थनीति थी, इंदिरा गांधी ने इसमें समाजवादी अर्थशास्त्र जोड़ा। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ। नरसिंह राव के प्रधानमंत्री काल में समूची अर्थव्यवस्था बैठ गई। यही अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह तब वित्तमंत्री थे। उन्होंने विदेशी पूंजी को भारत की समृद्धि का मूल आधार बताया। कहा गया कि इसी पूंजी से देश का आर्थिक विकास होगा, गरीबी दूर होगी, रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, चालू खाते का घाटा खत्म होगा, खेती किसानी का विकास होगा। सपने ही सपने थे इस नए मॉडल में। यही विद्वान प्रधानमंत्री सपनों के सौदागर थे। इंदिरा गांधी के मॉडल में संयमित समाजवादी नीतियों के रास्ते गरीबी हटाओ का ऐलान था। मनमोहन सिंह के अर्थशास्त्र में बेलगाम पूंजी के माध्यम से गरीबी हटाने, रोजगार देने व कृषि विकास के सपने थे। 10 प्रतिशत विकास दर का वायदा था। मनमोहन सिंह ने नौ बरस इसी अर्थव्यवस्था पर राज किया। गरीबी बढ़ती गई, रोजगार के अवसर घटे, महंगाई पंख लगाकर उड़ी, कृषि क्षेत्र में 4 प्रतिशत विकास की दर दूर की कौड़ी है। किसान आत्महत्या कर रहे हैं। संप्रग संचालित और विदेशी पूंजी व संस्थागत भ्रष्टाचार आधारित यह अर्थव्यवस्था असफल हो गई है। मूलभूत प्रश्न है कि क्या विदेशी पूंजी ही भारतीय अर्थव्यवस्था में समृद्धि ला सकती है? विदेशी पूंजी का आगमन न हो तो भारत का क्या होगा? हम कृषि प्रधान देश कहे जाते हैं, लेकिन खाद्यान्न और खाद्य तेलों का आयात करते हैं। भारतीय कृषि क्षेत्र अधमरा हो चुका है। भारत में आर्थिक नीति पर राजनीति नहीं होती। आर्थिक उदारीकरण के लाभ-हानि पर संसद में कभी चर्चा नहीं हुई। सारी दुनिया की राजनीति अर्थनीति से प्रभावित होती है, भारत की राजनीति पंथ, मजहब, जाति और क्षेत्र से। चुनावी घोषणा पत्रों में बेशक अर्थनीति पर कुछ अंश होते हैं, लेकिन वे चुनावी मुद्दे नहीं होते। लोकसभा चुनाव सामने है। संप्रग मनरेगा जैसे कुछेक आर्थिक कार्यक्रम लेकर सामने आएगा। आर्थिक मोर्चे पर बुरी तरह विफल संप्रग के पास बताने के लिए कुछ भी शेष नहीं बचा। आर्थिक विकास दर, औद्योगिक विकास दर, महंगाई, कृषि क्षेत्र की विकास दर, सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र की भागीदारी, किसान आत्महत्या की दर, कुपोषण और गरीबी की रेखा के नीचे के लोगों की त्रासदी जैसे सभी प्रश्नों पर वह देश का अभियुक्त है। आमजन अर्थनीति की बारीकियां नहीं जानते, लेकिन युवा पीढ़ी को ये बारीकियां समझाई जा सकती हैं। विपक्ष आर्थिक नीतियों की विफलता और घपलों-घोटालों को मुद्दा बना सकता है। अर्थनीति को चुनावी मुद्दा बनाना राष्ट्रहित का भी कार्य है। अर्थव्यवस्था संचालन की विफलता और भ्रष्टाचार को संरक्षण देने की नीति ही संप्रग की पराजय का कारण बनेगी। ■

(लेखक उप्र विधान परिषद के सदस्य हैं)

(दैनिक जागरण से साभार)

भाजपा का 'जेल भरो आंदोलन' स्थगित

उत्तराखंड की त्रासदी इस शताब्दी की सबसे भीषण प्राकृतिक आपदाओं में से एक है। इसमें सैकड़ों लोग मारे गए और हजारों लोग अभी भी फंसे हुए हैं। भाजपा अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने स्वयं प्रभावित क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया था। उन्होंने इस त्रासदी की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के गृहमंत्री से इसे राष्ट्रीय आपदा न घोषित करने के अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया है।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भाजपा इसे राष्ट्रीय आपदा मानती है। इसीलिए श्री राजनाथ सिंह ने 17 जून से 30 जून, 2013 तक भाजपा द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रव्यापी "जेल भरो आंदोलन" स्थगित कर दिया है।

उन्होंने देशभर के सभी भाजपा कार्यकर्ताओं और जन-प्रतिनिधियों को यह निर्देश दिया है कि वे "जेल भरो आंदोलन" की तैयारियों को छोड़कर अब राहत सामग्री इकट्ठा करने में जुट जाएं और उसे उत्तराखंड के पीड़ितों तक पहुंचाना सुनिश्चित करें।

उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं, जन-प्रतिनिधियों व आम जनता से यह अनुरोध किया है कि वे अधिक से अधिक सहायता व सहयोग उत्तराखंड त्रासदी के पीड़ितों तक पहुंचाएं। वे अपना सहयोग "भारतीय जनता पार्टी के आपदा राहत कोष" को अथवा सीधे उत्तराखंड सरकार को भेज सकते हैं। ■

नितीश कुमार के 'सैकुलर' झूठ का साम्प्रदायिक सच

✍ अम्बा चरण वशिष्ठ

बिहार के मुख्य मन्त्री श्री नितीश कुमार केवल इस बात पर इतराते नहीं थक रहे कि प्रधान मन्त्री डा0 मनमोहन सिंह ने उन्हें ''सैकुलर'' होने का जुबानी प्रमाणपत्र दे दिया है। उन्होंने इसके लिये प्रधान मन्त्री का धन्यवाद भी कर दिया है। पर कुमार साहिब यह नहीं जानते कि यह प्रमाणपत्र राजनीतिक है। न जाने प्रधान मन्त्री कब अप्रसन्न हो जायें और इसे वापस भी ले लें उनके साथ जब कांग्रेस का अपना राजनीतिक व चुनावी मतलब पूरा हो जाये।

प्रधान मन्त्री के प्रमाणमत्र का तो यह भी अभिप्राय निकलता है कि क्या इससे पूर्व श्री नितीश कुमार ''सैकुलर'' नहीं थे और न अपने आपको ऐसा मानते ही थे?

असल में 'सैकुलर' व 'साम्प्रदायिक' तो जनता को मूर्ख बनाने का एक ढकोंसला है। वास्तविकता यह है कि बिहार में 15 प्रतिशत मुसलमान मतदाता हैं। इस लिये सब नामनिहाद 'सैकुलर' दलों की उनके वोटों पर साम्प्रदायिक गिद्ध नजर रहती है। 'सैकुलर' दलों का मानना है कि चुनाव में हार-जीत का अन्तर तो 5 प्रतिशत से भी कम होता है। इसलिये जो दल इन साम्प्रदायिक वोटों का अच्छा प्रतिशत हड़प लेने में सफल हो जाता है वही जीत का 'सैकुलर' सिकन्दर होने का ढिंढोरा पीटता फिरता है। सारांश यह निकला कि ''शेर आया-शेर आया'' की तर्ज पर बहुसंख्यकों के विरूद्ध हौआ खड़ा करो, उनके साम्प्रदायिक वोट बंटोरो और बस बन जाओ ''सैकुलर''।

असल में 'सैकुलर' व 'साम्प्रदायिक' तो जनता को मूर्ख बनाने का एक ढकोंसला है। वास्तविकता यह है कि बिहार में 15 प्रतिशत मुसलमान मतदाता हैं। इस लिये सब नामनिहाद 'सैकुलर' दलों की उनके वोटों पर साम्प्रदायिक गिद्ध नजर रहती है। 'सैकुलर' दलों का मानना है कि चुनाव में हार-जीत का अन्तर तो 5 प्रतिशत से भी कम होता है। इसलिये जो दल इन साम्प्रदायिक वोटों का अच्छा प्रतिशत हड़प लेने में सफल हो जाता है वही जीत का 'सैकुलर' सिकन्दर होने का ढिंढोरा पीटता फिरता है। सारांश यह निकला कि ''शेर आया-शेर आया'' की तर्ज पर बहुसंख्यकों के विरूद्ध हौआ खड़ा करो, उनके साम्प्रदायिक वोट बंटोरो और बस बन जाओ ''सैकुलर''।

पर उन्हें यह भी पता होना चाहिये कि ''शेर आया-शेर आया'' का ढोंग सदा नहीं चलता। एक दिन इस खोखले शोर से जनता ऊब जाती है और उसकी परवाह नहीं करती। यथार्थ यह है कि उस दिन सचमुच ही शेर आया होता है और झूठा शोर मचाने वाले को निगल जाता है।

अभी मई 2013 में ही उनके ''शेर आया - शेर आया'' ढोल की पोल खुल गई। महाराजगंज लोक सभा उपचुनाव जीतने के प्रयास में श्री नितीश कुमार ने अपनी सारी ताकत झोंक दी। इसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना दिया। जदयू प्रत्याशी की जीत के लिये पूरी कमान उन्होंने अपने हाथ में ले ली। पूरे लाव-लश्कर के साथ वह पूरे चुनाव अभियान के दौरान पूरा समय वह चुनाव क्षेत्र में ही डटे रहे। मुस्लिम समुदाय को साम्प्रदायिक अपील कर यह समझाने की पूरी की पूरी कोशिश की कि मुस्लिम सम्प्रदाय का उन से बड़ा 'सैकुलर' हितैषी कोई नहीं है। उन्होंने मतदाताओं को यह सन्देश देने का पूरा प्रयास किया कि वह सबसे बड़े 'सैकुलर' हैं और यह साबित करने के लिये वह बड़े से बड़ा त्याग भी कर सकते हैं। जनता में भी यह सन्देश जाने लगा था कि अपना संकीर्ण स्वार्थ सिद्ध करने के लिये वह भारतीय जनता पार्टी से भी अपना 17 साल पुराना सम्बन्ध विच्छेद कर सकते हैं।

पर हुआ वही जो उस पुरानी ''शेर आया - शेर आया'' कहावत में हुआ। मतदाता नितीश के झूठ को समझ गये। श्री नितीश के अपना खून-पसीना बहाने के बावजूद लालू के राजद का प्रत्याशी जो पिछली बार मात्र 2700 वोटों से जीता था इस बार एक लाख 37 हजार के रिकार्ड मतों से जीता। कांग्रेस ने भी

श्री नितीश की मदद करने के लिये अपना प्रत्याशी खड़ा किया था। पर कोई फायदा न हुआ। उल्टे उसकी जमानत भी जब्त हो गई।

यह तो मीडिया व राजनीतिक हल्कों में बड़े दिनों से चर्चा थी कि श्री नितीश वही ड्रामा खेलने की फिराक में हैं जो चार वर्ष पूर्व ओडीशा में भाजपा के साथ बीजेडी ने किया था। जब भाजपा ने अपनी गोवा कार्यकारिणी में गुजरात के मुख्य मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी को चुनाव अभियान समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया तो पहले तो श्री नितीश व जदयू अध्यक्ष श्री शरद यादव ने बड़ा सैद्धान्तिक स्टैंड लिया कि यह भाजपा का अन्दरूनी मामला है। वह किसी को बनाये या न बनाये, हमें कुछ लेना देना नहीं। श्री मोदी को भाजपा चुनाव प्रचार समिति की बागडोर दी गई है राजग की नहीं। पर उन्हें तो भाजपा से नाता तोड़ने का बहाना चाहिये था। इस लिये कुछ पीछे से भी तार हिले। अब उन्होंने पैंतरा बदला और मांग कर डाली कि भाजपा अपना प्रधान मन्त्री पद का उम्मीदवार घोषित करे और उसकी पहचान ''सैकुलर'' होनी चाहिये। इसकी व्याख्या उन्होंने नहीं की कि इसका अभिप्राय क्या है।

भाजपा ने ऐसा नहीं किया। यह निर्णय पार्टी को अपने आप उचित समय पर लेना है, किसी के दबाव में आकर नहीं। पार्टी ने इस विषय पर अभी निर्णय भी नहीं लिया था कि जदयू राजग से अलग हो गई। अपनी सरकार को बचाने के लिये जदयू को कांग्रेस पर निर्भर होना पड़ा। आज वही कांग्रेस उसके लिये सब कुछ हो गई जिसके विरोध में उनकी पार्टी ने जन्म लिया था। पार्टी लोक नायक जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया व जार्ज फर्नांडीस के नाम की तो बड़ी कसमें खाती है पर आज उन्हीं के आदर्शों का तिलांजलि दे दी है। फर्नांडीस साहिब जैसे बुजुर्ग अपने नेता के साथ उन्होंने क्या किया वह सब को विदित ही है। जदयू सोशलिस्ट पार्टी की धरोहर है और उसकी नस नस में कांग्रेस विरोध का खून दौड़ता था। उसने उसके साथ भी विश्वासघात किया है। आज वही कांग्रेस उसकी आंख का तारा बन गई है। जनता मूर्ख नहीं है। वह सब कुछ जानती-समझती है। ■

(लेखक भाजपा साहित्य एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक हैं)

पृष्ठ 8 का शेष...

बनाकर रखा जाए न कि पंजाब में।

इस सुनियोजित अभियान का परिणाम देश के लिए सदमा पहुंचाने वाली विपदा के रुप में सामने आया। 23 जून, 1953 को राष्ट्र को यह समाचार पाकर सदमा पहुंचा कि डा. मुकर्जी जिन्हें बंदी बनाकर श्रीनगर के एक घर में रखा गया था, अचानक बीमार हुए, और थोड़ी बीमारी के बाद चल बसे!

पश्चिम बंगाल के तत्कालीन कांग्रेसी मुख्यमंत्री डा. विधान चन्द्र राय, डा. मुकर्जी की पूजनीय माताजी श्रीमती जोगोमाया देवी और देश के सभी भागों से अनेकानेक प्रबुध्द नागरिकों ने प्रधानमंत्री कार्यालय को टेलीग्राम और पत्र इत्यादि भेजकर न केवल अपना दुरूख और आक्रोश प्रकट किया अपितु तुरंत जांच कराने की भी मांग की कि यह त्रासदी कैसे घटी। इस राष्ट्रीय आक्रोश का कोई नतीजा नहीं निकला। इस असाधारण व्यक्ति की मृत्यु आज भी रहस्य बनी हुई है। ऐसी किसी अन्य घटना के संदर्भ में, एक औपचारिक जांच सर्वदा गठित की जाती रही हैं। लेकिन इस मामले में नहीं। कोई नहीं कह सकता कि क्या यह मात्र अपराधिक असंवेदनशीलता का मामला है या वास्तव में अपराध बोध का भाव! हालांकि, रहस्यमय परिस्थितियों में डा. मुकर्जी की मृत्यु को लेकर उमड़े व्यापक जनाक्रोश के चलते अगले कुछ महीनों में घटनाक्रम तेजी से बदला जिससे राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया महत्वपूर्ण रुप से आगे बढ़ी।

सर्वप्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा परमिट सिस्टम की समाप्ति।

उस समय तक न तो सर्वोच्च न्यायालय, न ही निर्वाचन आयोग और न ही नियंत्रक एवं महालेखाकार के क्षेत्राधिकार में जम्मू एवं कश्मीर राज्य नहीं था। इन तीनों संवैधानिक संस्थाओं का क्षेत्राधिकार जम्मू एवं कश्मीर पर भी लागू किया गया। उस समय तक राज्य के मुख्यमंत्री को वजीरे-आजम और राज्य के प्रमुख को सदरे-रियासत कहा जाता था। सैद्धांन्तिक रुप से, न तो भारत के राष्ट्रपति और न ही प्रधानमंत्री का इस राज्य पर कोई अधिकार था।

डा. मुकर्जी के बलिदान ने इस स्थिति में भी बदलाव लाया। राज्य में प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री बन गये, सदरे-रियासत राज्यपाल बन गये और राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री के औपचारिक अधिकार जम्मू एवं कश्मीर राज्य पर भी लागू हुए।

एक प्रकार से, इस प्रेरक नारे की तीन मांगों में से एक, दो प्रधान एक हो गए, और यद्यपि दो निशान अभी भी हैं मगर राष्ट्रीय तिरंगा राज्य में ऊपर लहराता है। इसके अलावा, दो प्रधानमंत्री एक बने, दो सर्वोच्च न्यायालय एक हुए, दो निर्वाचन प्राधिकरण एक हुए - यह सब डा. श्यामा प्रसाद के बलिदान के कारण हुआ।

देश व्यग्रता से उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा है जब धारा 370 समाप्त होगी और दो विधान भी एक हो जाएंगे! ■

भाजपा ने बिहार में मनाया 'विश्वासघात दिवस'

विकास आनन्द की रिपोर्ट

जद (यू) ने एनडीए के साथ अपने 17 वर्षीय गठबंधन को तोड़कर बिहार की जनका के साथ विश्वासघात किया है, अत: इस टूट के दो दिन बाद भाजपा ने 18 जून को पूरे बिहार में विश्वासघात दिवस कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस दिन भाजपा द्वारा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विश्वासघात करने के विरोध में बंद रखा गया, जिन्होंने अपने मंत्रिमण्डल से 11 भाजपा मंत्रियों को बर्खास्त कर दिया एवं कोई भी ठोस कारण बताए बिना गठबंधन तोड़ने की भी घोषणा कर दी थी। बंद समर्थकों ने जगह-जगह सड़कों पर भाजपा के पक्ष में इस विश्वासघात के खिलाफ नारे लगाए और वे भाजपा का झण्डा लहरा रहे थे।

शहर के अनेक क्षेत्रों में भाजपा के सर्वोच्च नेताओं तथा विधायकों और पूर्व-केन्द्रीय तथा राज्य मंत्रियों को गिरतार किया गया। इन लोगों में श्री सुशील कुमार मोदी, श्री मंगल पाण्डे, श्री रविशंकर प्रसाद, श्री शाहनवाज हुसैन, श्रीमती सुखदा पाण्डे, श्री प्रेम कुमार, श्री गिरिराज सिंह, श्री व्यासदेव प्रसाद और श्री जनार्दन सिंह शामिल थे। पूरे राज्य में 4000 से अधिक बंद समर्थकों को गिरफ्तार किया गया।

बंद का असर साफ दिखाई पड़ा क्योंकि अधिकांश दुकानें तथा व्यापारिक संस्थान बंद रहे। लोगों ने स्वत: स्फूर्त बंद का समर्थन किया और अपनी दुकानें तथा अन्य सेवाएं बंद रखीं। हालांकि भाजपा ने घोषणा की थी कि इसका असर रेल यातायात पर नहीं पड़ेगा, फिर भी लोगों ने पटना-गया, पटना-बक्सर और पटना-मोकाया लाइनों पर गाड़ियों की आवाजाही को बाधित किया।

अस्पतालों और छोटे वाहनों को भी बंद के दायरे से बाहर रखा गया था, परन्तु पटना में गाड़ियों की आवाजाही एकदम कम रही। पूर्व केन्द्रीय मंत्री शाहनवाह हुसैन ने मुस्लिम समुदाय के लोगों का मार्च निकाला। उन्होंने भाजपा तथा नरेन्द्र मोदी के पक्ष में जोरदार नारे लगाए।

हुसैन ने कहा कि इमर्जेसी के बाद से यह बंद बिहार में सबसे बड़ा बंद रहा है। उन्होंने कहा कि ''यह नीतीश सरकार के पतन की शुरूआत है। इससे पहले हमने इतना बड़ा बंद नहीं देखा है, बल्कि जेडी(यू) के लोग बंद की सफलता के बारे में मुझसे सहमत होंगे।

बिहार प्रदेशाध्यक्ष श्री मंगल पाण्डे ने संवाददाताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम पर जेडी(यू) के हथियारबंद कार्यकर्ताओं ने हमारे कार्यालय के बाहर हमला किया। उन्होंने सेक्युलरिज्म के दावे पर नीतीश सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि भाजपा की अल्पसंख्यक महिला नेता फहीदा खानम पर उनके महजब के आधार पर हमला किया और इसलिए जब जेडी(यू) सेक्युलरिज्म की बात करती है तो ताज्जुब होता है। श्री पाण्डे ने यह भी कहा कि ''बिहार बंद'' के आह्वान पर लोगों के समर्थन करने के लिए हम उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं। गरदनी बाग स्टेडियम, जो कि

अस्थायी कारागार बनाया गया था, में ले जा रही बसें पूरी तरह भाजपा कार्यकर्ताओं से भरी हुई थीं। इससे पूर्व, नेताओं ने भाजपा मुख्यालय से शहर के बीचोबीच डाक बंगले तक विरोध प्रदर्शन किया।

यह इतिहास में पहली बार हुआ है कि जब किसी विपक्षी पार्टी द्वारा विरोध-प्रदर्शन करने पर सत्ताधारी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने अपने गुण्डों को साथ लेकर भाजपा मुख्यालय पर आकर कार्यकर्ताओं पर हमला बोला। उन्होंने भाजपा की महिला कार्यकर्ताओं के साथ बदतमीजी भी की।

राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता श्री रविशंकर प्रसाद ने पटना में बंद में भाग लेते हुए कहा कि बिहार में उनकी पार्टी को सड़कों पर इसलिए आना पड़ा क्योंकि लोग जेडी(यू)-भाजपा को सत्ता का जनादेश दिए जाने के बाद गठबंधन तोड़े जाने से अत्यधिक अपमानित और छला महसूस कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ''हम बहुत अच्छा शासन चला रहे

थे। अचानक ही, केवल अहंकार और घमण्ड के कारण, आपने गठबंधन तोड़ने का फैसला कर लिया।

अत: लोग सचमुच अपने को छला महसूस कर रहे थे। और इस पर अपनी चिंता प्रगट करने पर आज हम पर सड़कों पर हमला किया गया। मोदी एक अत्यंत लोकप्रिय नेता हैं क्योंकि वे सुशासन चलाते हैं, क्योंकि वे अखण्डता में विश्वास करते हैं, क्योंकि वे अच्छा नेतृत्व प्रदान करते हैं... वे प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे या नहीं, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका निर्णय पार्टी का संसदीय बोर्ड करेगा।'' पूर्व बिहार उप-मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने नीतीश के विश्वासघात पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि 2010 में बिहार के लोगों द्वारा गठबंधन सरकार को साफ जनादेश दिया था, अब जेडी(यू) ने एनडीए से अलग होने का फैसला किया है तो यह घटना लोगों का घोर अपमान है और जो कुछ भी जनता दल(यू) ने किया है, वह मतदाताओं तथा हमारे साथ किया गया धोखा है। उन्होंने आगे कहा कि हम पूरी तरह से गठबंधन धर्म से बंधे रहे हैं और हमने सरकार को सुचारू रूप से चलाने के लिए पिछले सात वर्षों में किसी तरह की बाधा उत्पन्न नहीं की... फिर भी जेडी(यू) ने अकारण ही अवसरवादी ढंग अपना कर एनडीए से बाहर होने का निर्णय कर लिया। श्री मोदी ने यह भी कहा कि 17 वर्ष की सांझेदारी के बाद बीजेपी-नीत एनडीए से अलग होने को एक लम्बे समय तक बिहार के राजनैतिक इतिहास में 'काले अध्याय' का नाम दिया जाता रहेगा।

17 जून को एनडीए छोड़ने के बाद श्री नीतीश कुमार के फैसले के बाद उन्हें श्री मोदी की सराहना को ध्यान में रखना होगा। श्री नीतीश ने 2003 में

एक सार्वजनिक समारोह में कहा था- ''मुझे आशा है कि श्री नरेन्द्र मोदी कुछ समय बाद केवल गुजरात तक सीमित नहीं रहेंगे। देश को उनकी सेवा की आवश्यकता है।''

अब यह इस बात को 'सौजन्यता' का नाम देकर टाल रहे हैं। इसका मतलब यही है कि श्री नीतीश कुमार ''सौजन्यता'' के नाम पर झूठ बोलते हैं या फिर वे कांग्रेस के हाथों खेल रहे हैं। यह भला कैसे हो सकता है कि जो व्यक्ति 2003 में साम्प्रदायिक न हो, वही अचानक आज उसके लिए साम्प्रदायिक बन जाता है? सच्चाई यही है कि नीतीश कुमार एक खास सम्प्रदाय के लोगों का वोट प्राप्त करने के लिए साम्प्रदायिक राजनीति के शिकार हो रहे हैं और सम्प्रदायों के बीच नफरत के बीज बो रहे हैं।

लोगों ने भाजपा के बिहार बंद के आह्वान पर सामूहिक रूप से एकजुट होकर जेडी(यू) की विश्वासघाती तथा अवसरवादी राजनीति के खिलाफ अपना आक्रोश प्रगट किया है। ■

बिहार

क्या अपराध किया मोदी ने : राजनाथ सिंह

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने पटना में 23 जून को जदयू पर हमला बोलते हुए कहा कि गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने क्या अपराध किया है, जिससे जदयू ने राजग से नाता तोड़ लिया।

श्री सिंह ने कहा कि 2002 से लेकर मई 2013 तक श्री मोदी के साथ कोई समस्या नहीं थी, लेकिन अचानक ऐसा क्या हो गया कि जदयू के नेतृत्व ने 17 साल पुराने अच्छे संबंध को तोड़ लिया।

उन्होंने कहा कि भाजपा ने श्री मोदी को केवल चुनाव प्रचार अभियान समिति का प्रमुख बनाया था, ऐसे में जदयू दूसरी पार्टी के अंदरुनी मामलों पर निष्कर्ष निकालकर उसने राजग से बाहर जाने को चुना। श्री सिंह ने कहा कि सभी राजनीतिक दल अपने बारे में निर्णय लेने को स्वतंत्र है। श्री मोदी की लोकप्रियता और वोट दिलाने की क्षमता को देखते हुए उनकी पार्टी ने भी उन्हें चुनाव प्रचार समिति का प्रमुख बनाया और ऐसा करके क्या गलत किया।

उन्होंने नीतीश को सलाह दी की कि आप किसी और के साथ गठबंधन कर लीजिए पर कांग्रेस जिसकी नैया डूबने वाली है, उसके साथ गठबंधन नहीं करिये। जदयू के भाजपा से नाता तोड़ने पर नीतीश द्वारा भाजपा के मंत्रियों को बिना उन्हें इस्तीफा देने का मौका देकर एकाएक हटाए जाने को गलत बताते हुए उनकी इस कार्रवाई को एकतरफा बताया। श्री नरेंद्र मोदी को सुशासन और विकास का प्रतीक चिन्ह बताते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि उनकी उपलब्धियों की चर्चा विश्व में हो रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा शासित अन्य प्रदेशों के मुख्यमंत्री भी अपने-अपने राज्यों में बेहतर काम कर रहे हैं, उनके बेहतर क्रियाकलाप के मद्देनजर उन्हें विश्वास है कि भाजपा के केंद्र में सत्ता में आने से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दलदल से देश बाहर आ सकेगा।

श्री राजनाथ सिंह ने केंद्र की कांग्रेसनीत संप्रग सरकार पर प्रहार करते हुए कहा कि कांग्रेस ने इस देश पर 54-54 सालों तक देश पर हुकूमत की है, लेकिन 120 करोड़ की आबादी वाले भारत की आज गिनती विश्व के गरीब देशों में होती है। उन्होंने आरोप लगाया कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी दल ने अगर भारत की छवि को धूमिल करने का काम किया है तो वह केवल कांग्रेस ने किया है। श्री सिंह ने आरोप लगाया कि जबसे संप्रग केंद्र में सत्ता में आयी है देश में महंगाई बढती जा रही है और इसे छह महीने में रोक देने का दावा करने वाली यह सरकार उसे आजतक नहीं रोक पायी है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली भाजपा की पिछली राजग सरकार की चर्चा करते हुए कहा कि उस समय हमने महंगाई को बढ़ने नहीं दिया।

श्री सिंह ने कहा कि राजग शासन काल में देश का सकल घरेलू उत्पाद दर आठ फीसदी हो गया था। आज घटकर यह पांच प्रतिशत पहुंच गया है। राजग शासनकाल में जहां डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत करीब 45 रुपये थी। वह आज साठ रुपये पहुंच गयी है। कांग्रेस पर भारत की आन, बान और शान की रक्षा नहीं करने का आरोप लगाते हुए श्री राजनाथ सिंह कहा कि आज चीन हमारी सीमा के भीतर आ जाता है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से चीन आज भारत की सीमाओं को चारों तरफ से घेरने की कोशिश कर रहा है उससे भारत का मान, सम्मान और स्वाभिमान आज खतरे में है और इसे अगर कोई पार्टी बचा सकती है तो वह केवल भाजपा ही बचा सकती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेसनीत केंद्र की संप्रग सरकार के कुशासन का जिक्र करते हुए इस सरकार के कार्यकाल में भ्रष्टाचार के इतने मामले खुल चुके हैं उसे याद रख पाना मुश्किल हो रहा है।

श्री सिंह ने कहा कि ऐसे दल (कांग्रेस) के साथ जदयू अगर जाना चाहती है तो वह जाए पर जनता ने उससे मुक्ति पाने का अब मन बना लिया है और उन्हें पूरा विश्वास है कि अगले लोकसभा चुनाव में बिहार की सभी 40 सीटों पर

भाजपा उम्मीदवारों को विजयी होने पर केंद्र में सरकार बनाने से कोई रोक नहीं पाएगा। भाजपा के इस कार्यकर्ता सम्मेलन को बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री सर्वश्री सुशील कुमार मोदी, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मंगल पांडेय, बिहार विधानसभा में भाजपा विधायक दल के नेता नंदकिशोर यादव, राज्यसभा में भाजपा के उपनेता रविशंकर प्रसाद, पार्टी महासचिव राजीव प्रताप रुडी, पार्टी उपाध्यक्ष डॉ. सी. पी. ठाकुर और भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सैयद शाहनवाज हुसैन सहित अन्य पार्टी नेताओं ने भी संबोधित किया।

पंजाब

दो बॉस चला रहे हैं देश को : नरेन्द्र मोदी

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कश्मीरियों के जख्मों को भरने और राज्य के विकास के लिए युवाओं को राष्ट्रीय मुख्यधारा में लाने की जरुरत बतायी। उन्होंने कहा कि वह दलों को साथ लाने और दिलों को जोड़ने के लिए काम करेंगे।

गत 23 जून को पठानकोट में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

के बलिदान दिवस के अवसर पर आयोजित एक रैली को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जिक्र करते हुए कहा कि अगर भाजपा सत्ता में आई तो उनके अधूरे कार्य को पूरा किया जायेगा। कश्मीर नीति, अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा पर संप्रग सरकार को निशाना बनाते हुए उन्होंने कहा कि संप्रग सरकार सभी मोचरे पर विफल रही है। श्री मोदी ने कहा, ''वाजपेयी ने कश्मीर का दिल प्यार, मोहब्बत और बातचीत के जरिये जीतने का प्रयास किया था। अगर वह 2004 में सत्ता में आते तो वह अपनी कश्मीर नीति में सफल होते।''

श्री मोदी ने कहा कि कश्मीरी युवा विकास और प्रगति करना चाहता है और उन्हें राष्ट्रीय मुख्यधारा में लाने की जरुरत है। गुजरात के मुख्यमंत्री ने कहा, ''कश्मीर घाटी के युवा विकास का हिस्सा बनना चाहते हैं। बंदूक खून बहा सकती है लेकिन यह किसी का भला नहीं कर सकती। उन्होंने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि एक देश में दो निशान, दो प्रधान और दो विधान, नहीं चल सकते। श्री मोदी ने कहा कि आज भी देश में यही स्थिति है। ''देश में दो बॉस है और हम नहीं जानते कि इनमें वास्तविक कौन है।'' रुपये के गिरते मूल्य का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस का मुकाबला गिरते रुपये से है कि पहले कौन अधिक गिरेगा।

उन्होंने कहा, ''आपका भविष्य उनके (कांग्रेस नीत संप्रग) हाथों में सुरक्षित नहीं है। हम युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ नहीं कर सकते।'' श्री मोदी ने कहा कि प्रधानमंत्री देश को बतायें कि दो मई को पाकिस्तान की जेल में सरबजीत सिंह की मौत के बाद उन्होंने क्या किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री यह बतायें कि नियंत्रण रेखा पर दो भारतीय सैनिकों का सिर काटे जाने के कुछ दिन बाद जयपुर में पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजा परवेज अशरफ को शानदार भोज क्यों दिया गया। श्री मोदी ने कहा कि वह उत्तराखंड में बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में लोगों की त्रासदी से काफी दुखी है।

झारखंड

राज्य की बदहाली को बदलने के लिए भाजपा को अकेले सत्ता में आना जरूरी : गडकरी

अपने दम पर झारखंड की सत्ता में आने के संकल्प के साथ भाजपा प्रदेश कार्यसमिति की दो दिवसीय बैठक 22 एवं 23 जून को झरिया स्थित अग्रवाल धर्मशाला में बनाये गये दीनदयाल उपाध्याय सभागार में संपन्न हुई। पहले दिन देश एवं राज्य के आर्थिक व राजनीतिक हालात पर चर्चा हुई और कृषि प्रस्ताव पेश हुआ। साथ ही राज्य की 81 में से 63 विधानसभा सीटों का रोडमैप तैयार करने का निर्णय लिया गया। ये ऐसी सीटें हैं जिसे भाजपा या जनसंघ ने कभी भी जीता है। प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रवींद्र राय की अध्यक्षता में शुरू हुई बैठक का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित कर भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने किया। इस मौके पर बालिका विद्या मंदिर की

छात्राओं ने राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम प्रस्तुत की।

श्री गडकरी ने कहा कि झारखंड एवं केंद्र में अपने दम पर सत्ता में आने का संकल्प के साथ कार्यकर्ता क्षेत्र में जायें। बूथ स्तर पर पार्टी को मजबूत बनाये। कहा कि झारखंड की कुव्यवस्था, बदहाली को बदलने के लिए भाजपा को अकेले सत्ता में आना जरूरी है। यह कार्यकर्ता ही कर सकते हैं। उग्रवाद पर बोलते हुए कहा कि यह अब सामाजिक, आर्थिक विषमता की लड़ाई नहीं हो कर लोकतांत्रिक व्यवस्था को नेस्तनाबूद करने की लड़ाई हो गयी है। कहा कि दो सांसद से भाजपा ने कार्यकर्ताओं के बल पर ही केंद्र की सत्ता तक पहुंची थी। अब एक बार फिर पूरा देश भाजपा की ओर देख रहा है। हर क्षेत्र में चुनौतियां है, जिससे भाजपा ही निबट सकती है।

बैठक में अध्यक्षीय भाषण में प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रवींद्र राय ने कहा है कि कांग्रेस ने झारखंड को लूट खंड बना दिया है। कांग्रेस के लिए सीधे सत्ता में आना संभव नहीं। ऐसे में बार-बार यहां राष्ट्रपति शासन लगा कर परोक्ष रूप से शासन कर रही है। साथ ही मधु कोड़ा जैसे निर्दलीय को सीएम बना कर राज्य को लूट लिया। झारखंड में पार्टी सामूहिक नेतृत्व में अगले लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव में शानदार सफलता हासिल करेगी। पार्टी का मनोबल ऊंचा है।

श्री राय ने कहा कि झारखंड में अपने बल पर पूर्ण बहुमत की सरकार भाजपा ही दे सकती है। पूरे राज्य में भाजपा का कोई विकल्प नहीं है। पिछले विधानसभा चुनाव में केवल दो प्रतिशत के मत अंतर के कारण पार्टी को एक दर्जन सीट पर हार का मुंह देखना पड़ा। उन्होंने केंद्र एवं राज्य से कांग्रेस को उखाड़ फेंकने की अपील की।

बैठक में राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री सौदान सिंह, पूर्व मुख्यमंत्री सर्वश्री अर्जुन मुंडा, प्रदेश संगठन महामंत्री राजेंद्र सिंह, प्रदेश प्रभारी रमापति त्रिपाठी, हजारीबाग के सांसद यशवंत सिन्हा, धनबाद के सांसद पीएन सिंह सहित कई वरिष्ठ नेता उपस्थित थे।

पृष्ठ 11 का शेष...

तो उसे चुनाव घोषणापत्र में भी स्थान मिल सकता है। उन्होंने कहा कि प्रकोष्ठों को भाजपा के अनुकूल वातावरण बनाने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। प्रकोष्ठों के पदाधिकारी प्रकोष्ठ के साथ-साथ भाजपा के भी कार्यकर्ता है। उन्होंने बताया कि प्रकोष्ठ भी अपने-अपने प्रकोष्ठों का प्रशिक्षण वर्ग लगा सकते हैं। उन्होंने कहा कि मंजिल खूबसूरत होनी चाहिए, रास्ता खूबसूरत हो या न हो। उनका सुझाव था कि कार्यकर्ता दूसरों के बारे में बात न कर, दूसरों से बात करें।

सभी सत्रों का संचालन मोर्चों व प्रकोष्ठों के प्रभारी श्री महेन्द्र पाण्डेय ने किया। उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने दीप प्रज्वलित करके किया। नव गठित राष्ट्रीय प्रकोष्ठों की पहली बैठक में सभी प्रतिनिधियों का परिचय राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ जी के उद्बोधन पूर्व श्री महेन्द्र पाण्डेय जी ने कराया। परिचय के बाद श्री पाण्डेय ने पिछले 3 वर्षों में प्रकोष्ठों द्वारा दिये गये कार्यों के बारे में विस्तार से बताया।

प्रस्तुतिः डॉ0 अनुपम आलोक

पृष्ठ 19 का शेष...

अपने समर्पित कार्यकर्त्ताओं के लिए जानी जाती है और हमें विश्वास है कि दिल्ली में भाजपा कार्यकर्त्ता कांग्रेस को हटाने और पार्टी को पुनः सत्ता में लाने के लिए तैयार हैं।"

प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक के दौरान परस्पर विचारों के आदान-प्रदान का एक सत्र भी हुआ। जिसमें सदस्यों ने विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी की भविष्य की रणनीति तैयार करने के लिए अनेक सुझाव दिये।

अनेक सदस्यों ने यह सुझाव दिया कि पार्टी को नगर निगमों में अपनी उपलब्धियों को प्रचारित करने और दिल्ली सरकार की विफलताओं को जनता के बीच बताने के लिए बड़ा अभियान चलाना चाहिए।

कुछ सदस्यों ने सुझाव दिया कि पार्टी को समाज के सभी वर्गों को समर्थन मिल रहा है और इन वर्गों की आकांक्षाओं को सम्मिलित करने के लिए जो भाजपा से जुड़े रहना चाहते हैं, एक तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है। कुछ सदस्यों ने औद्योगिक क्षेत्रों में विकास की कमी के कारण उद्योगपतियों की समस्याओं का मुद्दा भी उठाया।

कुछ सदस्यों ने कहा कि दिल्ली के लोग परिवर्तन के लिए व्याकुल हैं और सही उम्मीदवार के चयन तथा सभी स्तरों पर कार्यकर्ताओं के समुचित रूप से संगठित कर भाजपा बड़ी जीत के लिए अग्रसर है।

श्री गोयल ने आश्वासन दिया कि भाजपा इन सभी मुद्दों को चुनाव अभियान में उठायेगी और इसके लिए समाधान भी प्रस्तुत करेगी जिन्हें भाजपा के सत्ता में आने के बाद लागू किया जायेगा।

इस अवसर पर एक फिल्म भी दिखाई गई जिसमें दिल्ली भाजपा द्वारा हाल ही में किये गये कार्यक्रमों, विरोध प्रदर्शन और दूसरे मुद्दों की झलक थी।■